अंगसुत्ताणि

(३)

नायाधम्मकहाओ. उवासगदसाओ. अंतगडदसाओ
अणुत्तरोववाइयदसाओ. पण्हावागरणाइं. विवागसुयं

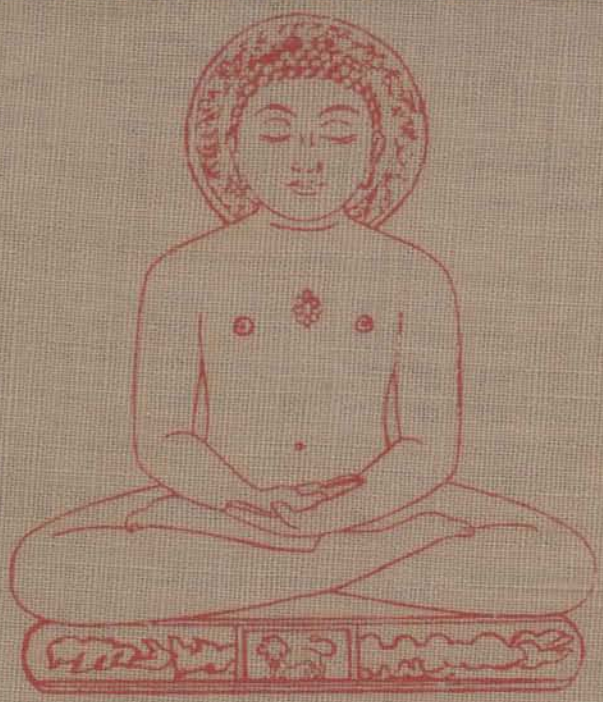

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ • उवासगदसाओ •

अंतगडदसाओ • अणुत्तरोववाइयदसाओ •

पण्हावागरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

संपादक

मुनि नथमल

प्रकाशक

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक : ९२५

मूल्य : ८०/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWĀIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

•

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आछा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जग-मगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बेंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पतरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदसा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं और विवागसुयं—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियां हुई हैं। कुछ त्रुटियां मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध हैं। वे कब हुई यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५९ में बारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानांग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। बाईस तीर्थंकरों के युग में चातुर्याम धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहां था वह यहां आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१९।४६ में भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। निशीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहां भी पात्र का प्रकरण है और यहां भी पात्र का प्रकरण है। काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचंकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है। पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है। यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएं हैं। यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए।
प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां।
अणहिलपाटकनगरे भाद्रपदद्वितीयां पज्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति। एवं सूत्र वृत्ति ९७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच में बावड़ी है।

लिपि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनंत-हंसगणीनां उपदेशेन ॥ साह श्री सूरा लिखापितं ॥ जोसी पोपा लिखितं ॥ भ्राति उज्जल संजुक्त घीआ लिखापितं ॥छ॥छ॥१ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ. टब्बा

यह प्रति १२वें अध्ययन से आगे काम में ली गई है।

२. उवासगदसाओ—

क. उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौड़ाई ¾ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वगैरह नहीं है पर विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ है। अतः उसके आधार पर यह ११८६ से पहले की ही मालूम पड़ती है।

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी में अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४½ इंच चौड़ा है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः श्रीः।

३. अंतगडदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अंत में (पत्र संख्या २८५ में) लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार पत्रों से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए।

ख. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की संयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन संवत् १४९५ है।

ग. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पंचपाठी है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०¾ इंच तथा चौड़ाई ४¾ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं। प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है। केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८९० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यत्नसूरीणा ॥

घ. यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। इसके पत्र २० हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति के बीच में टब्बा लिखा हुआ है। प्रति सुन्दर लिखी हुई है। पत्र की लम्बाई १० इंच व चो० ४½ इंच है। प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं।

थली हमारौ देश है, रिणी हमारो ग्राम।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥

गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल।
बड़ो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥

बीकानेर वत्मान है, राजपुतानां नाम।
जंगलधर बादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २२३ से २२८ तक। विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है।

ख. गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है। इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं। प्रत्येक पत्र १३½ इंच लम्बा तथा ५½ इंच करीब चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं। प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है। उसके अनुसार यह प्रति १४९५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा बलिदत्तशोभः।
डागाभिधा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥

मुक्ताफलतुलां बिभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं।
तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्रुचिरजायत ॥२॥

तदन्वयस्याभरणं बभूव वांगाभिधानः सुविशुद्धबुद्धिः ।
विवेकसत्संगतिलोचनाभ्यां दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
तदंगजन्माजनि वाहडाख्यः सद्धर्मकर्मार्जनबद्धकक्षः ।
वक्षो यदीयं गुरुदेवभक्तिरलंचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
क्रमेण तद्वंशविशालकेतुः कर्माविधः श्रावकपुंगवोभूत् ।
चित्रं कलावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चैः ॥५॥
तदंगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपमः ।
राजहंसगतिः शश्वच्चतुराननतां दधत् ॥६॥
तस्यार्हदंह्रियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
आसीदसामयशसः किल माल्हणाख्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शंभोः ॥७॥
तत्कुक्षिप्रभवाबभुवुरभितोप्युद्योतयंतः कुलं,
चत्वारस्तनया नयार्जितधना नाम्यर्थना भीरवः ।
आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यातः परो वर्द्धन-
स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमा भुवि ॥८॥
चत्वारोपि व्यधुरचरितां मर्त्यधात्रीरुहस्ते,
स्वौदार्येणातनुधनभृतो बांधवा धर्मकर्म ।
अन्योन्यं स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
गंगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनांह्रिलीना ॥९॥
तत्कुक्षिभूः श्रावक ऊदराज, आधो द्वितीयः किल बूट नामा ।
द्वावप्यभूतां गुरुदेवभक्तौ मंदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
ऊदाख्यस्य सभीरीति माऊ बूटस्य च प्रिया ।
आसधरो मंडनश्च तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
गंगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृतं पपौ ॥१२॥
आबाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरंतरं ।
एकादशांगसूत्राणि लेखयामास हर्षतः ॥१३॥
विजयिनि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
गुण[१] निधि[१] [४]वार्द्धींदु[१] मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
गंगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वांगपुस्तकं ।
दत्तेस्म श्रीतपोरलोपाध्यायेभ्यः प्रमोदतः ॥१५॥
॥छ॥ श्रीः ॥

ग. हस्तलिखित प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ९ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

की लम्बाई १०½ इंच तथा चौड़ाई ४½ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य हैं--

॥छ॥ अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छ॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाइं--

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ--

पत्र संख्या २२८ से २५९

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ९८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४½ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में बावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह--
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४½ इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक बावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ।छ॥ श्री॥ छ॥०॥ लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)--

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में बावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुल है।

च. मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

छ. यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनूं में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। बालावबोध पंचपाठी। पंक्तियां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है।

६. विवागसुयं—

क. मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। कुछ पंक्तियां अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई १$\frac{1}{2}$ इंच है और तीन कोष्ठकों में लिखी हुई है।

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १०$\frac{1}{2}$ तथा चौड़ाई ४$\frac{1}{2}$ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है:—

शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ संवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखितं ।छ॥ : ।

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मांगीलालजी बेंगानी बीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११$\frac{1}{2}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४९ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसयं अंगं समत्तं ॥ ग्रंथाग्र १२१६ ॥ टीका ९०० एतस्या ॥ लिपि संवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

घ. एम० सी मोदी तथा बी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १९३५, 'विवागसुयं।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएं हैं।[1]

जयधवला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलंक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।[2] आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएं' है। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।[3]

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वंश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ : ज्ञातृधर्मकथा।

३. (क) नंदीवृत्ति, पत्र २३०,३१ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथाः, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथाः पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायांगवृत्ति, पत्र १०८ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्वं संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथाः।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा[1]। वेबर के अनुसार जिस ग्रंथ में ज्ञातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है[2]। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवंशी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है[3]। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उक्खित्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंडूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है ?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मंडूप जैसे हो।'

'वह कूप-मंडूप कौन है ?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूए में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बढ़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंडूक ने कहा—तुम कौन हो ? कहां से आए हो ? उसने कहा—मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंडूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बड़ा है ? समुद्री मेंढक ने कहा—वह बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है ? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है ? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था[4]।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

---

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पत्र ६६०।
२. Stories From the Dharma of NAYA इं० एं० जि० १९, पृष्ठ ६६।
३. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।
   (ख) नंदी, सूत्र ८५।
४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६,१८७।

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवां अंग है। इसमें दस उपासकों का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अध्ययन इसमें संकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। प्रथम अध्ययन में उन बारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-संहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासकों की धार्मिक कसौटी की घटनाएं भी मिलती हैं। भगवान महावीर उपासकों की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषधोपवास, सचित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरंभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति[1]। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियां हैं। समवायांग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयधवला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

---

१. कसायपाहुड भाग १, पृष्ठ १२९, १३०।

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं[1]। नंदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है[2]। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं[3]। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं[4]। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है[5]। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है[6]।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किंकष, चिल्वक और फाल अंबडपुत्र[7]। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कंबल, पाल और अंबष्ठपुत्र[8]। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९६ :·····दस अज्झयणा सत्त वग्गा।

२. नंदी, सूत्र ८८·····अट्ठ वग्गा।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्झयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽप्यष्ट वर्गाः, नन्द्यामपि तथा पठितत्वात्।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देसणकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्सक्खतो अंतकडदस त्ति।
(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था।

७. ठाणं, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है[1]। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है[2]। नंदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायांग और तत्त्वार्थवार्तिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से सर्वथा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कांपिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानांग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है[3]। इससे स्पष्ट होता है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायांग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

'अंतगड' शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु 'गड' का 'कृत' रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांच-कारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगड़ता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगड़ने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की शृंखला में बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

———

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ :·····इत्येते दश वर्धमानतीर्थङ्करतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृतः दश अस्यां वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा।

२. कसायपाहुड भाग १ पृ० १३० : अंतयडदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गं दारुणे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण णिव्वाणं गदे सुदंसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि।

३. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३·····ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयामः।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है[1]। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है[2]। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है[3]। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है[4]। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त[5]।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, धान्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र[6]।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है[7]।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है[8]। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८९ :·····तिण्णि वग्गा।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

·····इत्येते दश वर्धमानतीर्थकरतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिकः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा।

(ख) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३०।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्हं तित्थयराणं तित्थेसु अणुत्तरविमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि।

४. समवाओ, पइण्णगसमवाओ ९७।

·····दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा·····।

५. ठाणं १०।११४।

६. तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३।

७. षट्खण्डागम १।१।२।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति।

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगार के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवां अंग है। समवायांग सूत्र और नंदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाइं' मिलता है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है[2]। समवायांग में 'पण्हावागरणदसासु'—यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायांग के अनुसार स्थानांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हवायरणं' और तत्त्वार्थवार्तिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है[3]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, संख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न[4]। इनमें वर्णित विषय का संकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायांग और नंदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-संवादों का वर्णन है[5]। नंदी मे इसके पैंतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानांग से उसकी

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

२. ठाणं १०।११०।

३. (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ : पण्हवायरणं णाम अंगं···।
   (ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० : ···प्रश्नव्याकरणम्।

४. ठाणं १०।११६:
   पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उवमा. संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं।

५. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८:
   पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पैंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है[1]।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण का वर्णन करता है[2]।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयधवला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्णि में उनका उल्लेख मिलता है[3]। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

---

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३, ७४ :
आक्षेपविक्षेपैर्हेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम्। तस्मिंल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः।

२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३१, १३२:
पण्हवायरणं णाम अंगं अक्खेवणी-विक्खेवणी-संवेयणी-णिव्वेयणीणामाओ चउव्विहं कहाओ पण्हादो णट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुखदुक्ख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि।

३. नंदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६९।

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवां अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुयं' है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है[2]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अंड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोदाह-आमरक और कुमार लिच्छवी[3]। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९९।
   (ख) नंदी, सूत्र ९१।
   (ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।
   (घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।
२. ठाणं १०।११०।
३. ठाणं १०।१११।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूँगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāngī. It has two Śruta-skandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMA-KAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.[1]

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmma-kahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāthadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛidharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'[2]. Ācharya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutasakandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.[3]

The family name of lord Mahavīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.[4] They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātṛiwanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ'.[5] But, on the account found in the Samwāyānga and the Nandi, the meaning

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 94.
2. Tatwartha Vartika, 1/20.
3. (a) Nandivritti, pages 230-31.
   (b) Samawayanga Vritti, page 108.
4. Jain sahitya ka Pitihas, Purwa-Pithika, page 660.
5. Stories from the Dharma of NAYA, I.A., Vol. 19, page 66.

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.[1] The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajnāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have came from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well[2].

---

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
   (b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāngī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramaṇū order the laymen serving the Śramaṇas are called Śramaṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramaṇopāsaka Anand was consecreted and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidently, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saćitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaćarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati[1]. The Śrāwakas, beginning from

1. Kasyapahuda, part i, pages 129-30.

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASÃO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasão'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas[1]. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it[2]. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas[3]. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas[4]. The Chūrṇikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasão' as it has ten Adhyayanas in the first Varga[5]. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also[6].

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

---

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
2. Nandi Sutra, 88.
3. Samwayanga Vritti, page 112.
4. Samawayanga Vritti, page 112.
5. (a) Nandi with Churni, page 68.
   (b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣhthaputtra.[1] These headings are fou d in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila,Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambaṣthaputtra. Samawayanga mentions ten adhayans without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛīta Kewalīs, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.[2] The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavrātika. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavarṭika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above- said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Aćala Kāmpilya, Akśetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhayadeva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'[3]. This shows that the 'Vāćnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vāćnā ' found in the 'Samawāyānga'.

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dīkśā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occured with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

---

1. Tatwarthavartika 1/20
2. Tatwarthavartika 1/20.
3. Sihany Vritti.

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavīra had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśangī. As it containsten Adhyayanas regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Aṇuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas[1]. The Sthānānga quotes only ten Adhyayanas.[2] According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.[3] The Samawāyānga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.[4] But the headings of the ten Adhyayanas have not been given in it. According to the Sthānānga and the Tattwārthavārttika they read as, Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta[5], and as Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātibhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattawārthavārttika.[6] In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda[7].

The present form of the Āgama is different from the 'Vaćna' of the Sthānāga and the Samawāyānga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaćna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanas, such

1. Nandi, Sutra, 89.
2. Thanam, 10/114.
3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.
4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.
5. Thanam 10/114.
6. Tattwarthvarttika 1/20.
7. Satkhundagama 1/1/2.

as Dhanya, Sunakshtra and Riṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛeṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Aṇagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PAṆHĀWĀGARAṆĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāngī. Its title has been mentioned as 'Paṇhāwāgaraṇāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī.[1] Its name is found as 'Paṇhāwāgaradasāo'[2] in the Sthānānga and the same reads as 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' in the Samawāyānga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Paṇhāwāyaraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.[3]

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānānga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā. Riṣibhāṣita, Ācāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Kṣaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.[4] The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.[5]

The Nandi notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanas.

---

1. (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra 90.
2. Thanam, 10/110.
3. (a) Kasayapahuda pt. I, page 131.
   (b) Tatwarthavarttika 1/20.
4. Thanam 10/116.
5. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra, 90.

But, from its 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama . The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāśita, Āćārya-bhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praṣna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could he spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama , depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.[1]

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.[2]

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaćarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Aćaurya, Brhmaćarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Āćārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepanī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Āćarya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.[3] Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

---

1. Tattwarthavarttika 1/20.
2. Kasayapahuda part I, page 131.
3. Nandi Sutra with the Curni on page 12.

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāngī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it. therefore the title 'Vivāgasuyam.'[1] The Sthānānnga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'[2]

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds . On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānānga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛigāputra, Gotrāsa, Anḍa, Sakata, Māhan, Nandiṣeṇa, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licćhavī. These headings have been taken from some other 'Vaćna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras in not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āćaryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

---

1. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99
   (b) Nandi Sutra 91.
   (c) Tattawarthavarttika 1/20
   (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132.
2. Thanam 10/110.

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

विवागसुयं

पढमो सुयक्कंधो

पढमं अज्झयणं सू० १-७१ पृ० ७१७-७३१

उक्खेव-पदं १, मियापुत्तवण्णग-पदं ९, गोयमस्स जाइअंधपुरिसविसए पुच्छा-पदं १६, भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पदं २६, गोयमस्स मियापुत्तदंसण-पदं २७, गोयमेण मियापुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ४१, मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं ४३, मियापुत्तस्य वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ५८, मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ७०, निक्खेव-पदं ७१ ।

बीयं अज्झणं सू० १-७४ पृ० ७३२-७४३

उक्खेव-पदं १, गोयमेण उज्झियस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १२, उज्झियस्स गोत्तासभव-वण्णग-पदं १७, उज्झियस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ४३, उज्झियस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ६६, निक्खेव-पदं ७४ ।

तइयं अज्झयणं सू० १-६६ प० ७४५ से ७५६

उक्केव-पदं १, गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १३, अभग्गसेणस्स निन्नयभव-वण्णग-पदं १७, अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं २३, अभग्गसेणस्स आगामिभव-वण्णग-पद ६५, निक्खेव-पदं ६६ ।

चउत्थं अज्झयणं सू०१-४० पृ० ७५७ से ७६२

उक्खेव-पदं १, सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १२, सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पदं १३, सगडस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १८, सगडस्स आगमिभव-वण्णग-पदं ३२, निक्खेव-पदं ४० ।

पंचमं अज्झयणं सू० १-३० पृ० ७६३ से ७६६

उक्खेव-पदं १ गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १०, बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्त-भव-वण्णग-पदं ११, बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव वण्णग-पदं १७, बहस्सइदत्तस्स आगमि-भव-वण्णग-पदं २९, निक्खेव-पदं ३० ।

छट्ठं अज्झयणं सू० १- ३८ पृ० ७६७-७७३

उक्खेव-पदं १, गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग पदं ९, नंदिवद्धणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं २५. नंदिवद्धणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३७. निक्खेव-पदं ३८ ।

सत्तमं अज्झयणं **सू० १-३९** **पृ० ७७४ से ७८२**

उक्खेव-पदं १, गोयमेण उंबरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, उंबरदत्तस्स धणंतरिभव-वण्णग-पदं १३, उंबरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १८, उंबरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३८, निक्खेव-पदं ३९ ।

अट्ठमं अज्झयणं **सू० १-२८** **पृष्ठ ७८२-७८७**

उक्खेव-पदं १, सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ८, सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग पदं ९. सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १४, सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं २७, निक्खेव-पदं २८ ।

नवमं अज्झयणं **सू० १-६०** **पृ० ७८८-७९७**

उक्खेव-पदं १, देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं ६, देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पदं ७, देवदत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ३०, देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं ५९, निक्खेव-पदं ६०

दसमं अज्झयणं **सू० १-२०** **पृ० ७९८-८०१**

उक्खेव-पदं १, अंजूए पुव्वभवपुच्छा-पदं ४, अंजूए पुढविसिरीभववण्णग-पदं ५, अंजूए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ९, अंजूएआगामिभव-वण्णग-पदं १९, निक्खेव-पदं २० ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं **सू० १-३७** **८०२-८०९**

उक्खेव-पदं १, सुबाहुकुमार-पदं ४, सुबाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १५ सुबाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं १६, सुबाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ३१, सुबाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३५, निक्खेव-पदं ३७,

२-१० अज्झयणाणि । **पृ० ८१०-८१३**

संकेत निर्देशिका

• ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्ति के प्रारम्भ में भरा बिन्दु [•[और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें–पृष्ठ २ सू ६।

[?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।

' ' ये दो या इससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।

× क्राश [×] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।

'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।

क, ख, ग, घ, च, छ, ब, देखें—सम्पादकीय में 'प्रति-परिचय' शीर्षक।

'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३९६ टिप्पण १।

'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें–पृष्ठ ५२९ टिप्पण १।

अं० अंतगडदसाओ।

अ० अणुत्तरोववाइयदसाओ।

उवा० उवासगदसाओ।

ओ० ओवाइयं।

ना० नायाधम्मकहाओ।

भं०, भग०, भगवई।

राय० रायपसेणइयं।

पण्हा० पण्हावागरणाइं।

वि० विवागसूयं।

सूय० सूयगडो।

जंबू० जंबूदीवपण्णत्ति।

विवागसुयं

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

मियापुत्ते

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं[1] नयरी होत्था—वण्णओ[2]। पुण्णभद्दे चेइए[3] ॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ[4], चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं[5] •चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी° जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं[6] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव[7] झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. नाम (क, ख)।

२. ओ० सू० १।

३. चेतिते (क); चेईए (ग); चेइए तहा वण्णओ (घ)।

४. ना० १।१।४।

५. °पुव्वी (क, ख); सं० पा०—पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव।

६. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।

७. ओ० सू० ८२।

४. तए णं अज्जजंबू नामे[1] अणगारे जायसड्ढे जाव[2] जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव[3] पज्जुवासमाणे[4] एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

५. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवाग-सुयस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य ।।

६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[7] संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

७. तए णं अज्जसुहम्मे[8] अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. 'मियउत्ते[10] य २.उज्झियए, ३.अभग्ग[11] ४.सगडे[12] ५. बहस्सई ६. नंदी ।
७. उंबर ८. सोरियदत्ते य, ९. देवदत्ता य १०. अंजू य'[13] ।।१।।

८. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[14] संपत्तेणं दुहविवागाणं दस

---

१. नामं (ग)
२. ओ० सू० ८३ ।
३. ओ० सू० ८३ ।
४. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) । एतादृशे प्रसंगे प्रायेण 'पज्जुवासमाणे' इति पाठो लभ्यते, लिपिदोषात् 'पज्जुवासइ' इति जातः संभाव्यते ।
५,६. ना० १।१।७ ।
७. ना० १।१।७
८. °सुधम्मे (क) ।
९. ना० १।१।७ ।
१०. मियापुत्ते (ख, घ) ।
११. अभग्गे (ख) ।
१२. सगते (ग) ।
१३. ठाणं (१०।१११) सूत्रे विपाकाध्ययननामसु विपर्ययो दृश्यते, तद्यथा—
मियापुत्ते य गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे ।
माहणे णंदिसेणे, सोरिए य उदुंबरे ।।
सहसुद्दाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति ।
१४. ना० १।१।७ ।

अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—मियउत्ते जाव[1] अंजू य। पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

मियापुत्त-वण्णग-पदं

९. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं मियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[2] ॥

१०. तस्स णं मियग्गामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे—वण्णओ[3] ॥

११. तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—चिराइए जहा पुण्णभद्दे[4] ॥

१२. तत्थ णं मियग्गामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ—वण्णओ[5] ॥

१३. तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा—वण्णओ[6] ॥

१४. तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते[7] नामं दारए होत्था—जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे[8]। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते ॥

१५. तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स जाइअंधपुरिसविसए पुच्छा-पदं

१६. तत्थ णं मियग्गामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ। से णं एगेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं[9] 'पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे'[10] फुट्ट-हडाहड-सीसे मच्छिया-चडगर-पहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे-गेहे कोलुण-वडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥

१७. तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे[11] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे

---

१. वि० १।१।७।
२. ओ० सू० १।
३. ना० १।३।३।
४. ओ० सू० २।
५. ओ० सू० १४।
६. ओ० सू० १५।
७. मियपुत्ते (क)।
८. वायवे (क, घ)।
९. डंडएणं (क, ग)।
१०. पगड्ढिज्जमाणे २ (ख); पगडिज्जमाणे २ (घ)।
११. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए।

गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे ° समोसरिए। परिसा निग्गया ॥

१८. तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कूणिए तहा निग्गए जाव[1] पज्जुवासइ ॥

१९. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तं महयाजणसद्दं च[2] •जणवूहं ए जणवोलं च जणकलकलं च ° सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा[3] •खंदमहे इ वा[4] उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जओ णं बहवे उग्गा भोगा[5] एगदिसिं एगाभिमुहा ° निग्गच्छंति ?

२०. तए णं से पुरिसे तं जाइअंधं पुरिसं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा[6] •खंदमहे इ वा[7] उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जओ णं बहवे उग्गा भोगा[8] एगदिसिं एगाभिमुहा° निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे[9] •भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ। तए णं एए जाव[10] निग्गच्छंति ॥

२१. तए णं से अंधे पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं[11] •महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामो ॥

२२. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तेणं पुरओ दंडएणं पुरिसेणं पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव 'उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'[12] तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ जाव[13] पज्जुवासइ ॥

२३. तए णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स रण्णो तीसे य[14] •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं° धम्ममाइक्खइ[15]। परिसा[16] पडिगया विजए वि गए ॥

---

१. ओ० सू० ५४-६९।
२. सं० पा०—जणसद्दं च जाव सुणेत्ता।
३. सं० पा०—इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति।
४. पू०—ना० १।१।९६।
५. पू०—ना० १।१।९६।
६. सं० पा०—इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति।
७. ८. पू०—ना० १।१।९६।
९. सं० पा०—समणे जाव विहरइ।
१०. वि० १।१।१९।
११. सं० पा०—भगवं जाव पज्जुवासामो।
१२. उवागए २ (ख, ग)।
१३. ना० १।१।९९।
१४. सं० पा०—तीसे य°।
१५. धम्मं परिकहेइ (ख)।
१६. परिसा जाव (क, घ)।

२४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[1] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२५. तए णं से भगवं गोयमे तं जाइअंधं पुरिसं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे[2] •जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे ° एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! केइ पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे[3] ?

हंता अत्थि ॥

भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पदं

२६. कहं णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे ?

एवं खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअंधे जायअंधारूवे । नत्थि णं तस्स दारगस्स[4] •हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती° आगितिमेत्ते ।

तए णं सा मियादेवी[5] •तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं° पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स मियापुत्तदंसण-पदं

२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

२८. तए णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए[6] समाण हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय[7] •मचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं° सोहेमाणे-

---

१. ओ० सू० ८२ ।

२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव एवं ।

३. जाइअंधारूवे (घ) ।

४. सं० पा०—दारगस्स जाव आगितिमेत्ते ।

५. सं० पा०—मियादेवी जाव पडिजागरमाणी ।

६. अणुण्णाते (क) ।

७. सं० पा०—अतुरियं जाव सोहेमाणे ।

सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ ॥

२९. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[1]•चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ?

३०. तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासिउं हव्वमागए ॥

३१. तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता एवं वयासी—एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह ॥

३२. तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए । तत्थ णं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइ-अंधे जायअंधारूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए ॥

३३. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—से के णं गोयमा ! से तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं[2] एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए[3] तुब्भं हव्वमक्खाए, जओ णं तुब्भे जाणह ?

३४. तए णं भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्माय-रिए समणे भगवं[4] •महावीरे तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्ठे तव ताव रहस्सीकए मम हव्वमक्खाते°, जओ णं अहं जाणामि । जावं च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥

३५. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! 'इहं चेव'[5] चिट्ठह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्टु जेणेव भत्तघरए[6] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टय[7] करेइ, करेत्ता कट्ठसगडियं[8]

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठहियया ।

२. जेणं तव (क, ख, ग, घ); प्रतिषु एतत् पदं लिपिदोषात् समुल्लिखित प्रतिभाति । अग्रे तुब्भं इति पाठदर्शनात् ।

३. रहस्सकडे (क) ।

४. सं० पा०—भगवं जाव जओ णं [ख, ग]; भगवं जओ णं (क); महावीरे जाव ततेणं (घ) ।

५. इहच्चेव (क) ।

६. भत्तपाणघरए (घ) ।

७. °परियट्टं (वृ) ।

८. कट्ठसगडि (ग) ।

गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स भरेइ, भरेत्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी -एह णं 'भंते ! तुब्भे मए सद्धिं'[1] अणुगच्छह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि ॥

३६. तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं पिट्ठओ समणुगच्छइ ॥

३७. तए णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरए[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चउप्पुडणं[3] वत्थेणं मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह ॥

३८. तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ ॥

३९. तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ। तए णं गंधे निग्गच्छइ, से जहानामए—'अहिमडे इ वा'[4] •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवावण्ण-दुब्भिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° गंधे पण्णत्ते ॥

४०. तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसएणं आहारेइ, आहारेत्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, विद्धंसेत्ता तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेइ, तं पि य णं पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥

गोयमेण मियापुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

४१. तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए[5] पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं 'पावगं फलवित्तिविसेसं'[6] पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया

१. तुब्भे भंते मम (ख, ग, घ)।
२. भूमिघरे (ख, घ)।
३ चउप्पालेणं (ग)।
४. अहिमडे इ वा सप्पकडेवरे इ वा (बृ); सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे।
५. × (क, ख, ग)।
६. पावफलविवागं (ग)।

वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेदिति[1] त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए। तए णं सा मियादेवी ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा, तं चेव सव्वं जाव[2] पूयं च सोणियं च आहारेइ। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा[3] •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ॥

४२. से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते[4] वा? 'कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा'[5]? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा[6] •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ?

मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं

४३. गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ[7]॥

४४. तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था—वण्णओ[8]॥

४५. तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे नामं खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे॥

४६. तस्स णं विजयवद्धमाणस्स[9] खेडस्स पंच गामसयाइं आभोए यावि होत्था॥

४७. तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई[10] नामं रट्ठकूडे होत्था—अहम्मिए[11] •अधम्मा-

---

१. वेत्ति (ख); वेयह (घ)।
२. वि० १।१।२९-४०।
३. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ।
४. गोए (घ)।
५. कयरं गामं (क); कयरं गामं कि कए (ख)।
६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ।
७. ओ० सू० १।
८. ओ० सू० १४।
९. °वड्ढमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र।
१०. एकायि (क, ग)।
११. सं० पा०—अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

णुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणंदे ॥

४८. से णं एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं 'आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे'[1] विहरइ ॥

४९. तए णं से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य विद्धीहिं[2] य उक्कोडाहि य पराभवेहिं[3] य देज्जेहिं[4] य भेज्जेहि य कुंतेहिं[5] य लंछपोसेहि य आलीवणेहि य पंथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे निद्धणे करेमाणे-करेमाणे विहरइ ॥

५०. तए णं से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसर[6]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं गामेल्लग-पुरिसाणं बहूसु 'कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झएसु य निच्छएसु य'[7] ववहारेसु य सुणमाणे भणइ 'न सुणेमि,' असुणमाणे भणइ 'सुणेमि,' [8]•पस्समाणे भणइ 'न पासेमि,' अपस्समाणे भणइ 'पासेमि,' भासमाणे भणइ 'न भासेमि।' अभासमाणे भणइ 'भासेमि,' गिण्हमाणे भणइ 'न गिण्हेमि,' अगिण्हमाणे भणइ 'गिण्हेमि,' जाणमाणे भणइ 'न जाणेमि,' अजाणमाणे भणइ 'जाणेमि'° ॥

५१. तए णं से एक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं 'पावं कम्मं'[9] कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ ॥

५२. तए णं तस्स एक्काइस्स[10] रट्ठकूडस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका[11] पाउब्भूया, [तं जहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले[12] भगंदले[13]।
अरिसा[14] अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले[15] अकारए।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू[16] उदरे[17] कोढे ॥१॥][18]

---

१. आहेवच्च जाव पालेमाणे (क, ख, ग)।
२. वित्तिहि (वृपा)।
३. पराभएहि (क, ग)।
४. देज्जए (क)।
५. कुत्तेहि (क, घ)।
६. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाणं।
७. कज्जेसु कारणेसु मंतेसु गुज्झएसु निच्छएसु (क); °गुज्झेसु° (घ)।
८. सं० पा०—एवं पस्समाणे भासमाणे गिण्हमाणे जाणमाणे।
९. पावकम्मं (ग)।
१०. एगाइयस्स (क, ख, ग, घ)
११. रोयायंका (क); रोयातंका (ख)।
१२. जोणिसूले (ग); 'जोणिसूले' त्ति अपपाठः 'कुच्छिसूले' इत्यस्यान्यत्र दर्शनात् (वृ)।
१३. भगंदरे (ख, ग, घ)।
१४. अरसा (ख)।
१५. मुहसूले (क, ग)।
१६. कंदू (ख)।
१७. दओदरे (क)।
१८. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

५३. तए णं से एक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—इहं खलु देवाणुप्पिया ! एक्काइस्स[1] रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे जाव कोढे][2], तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा 'जाणुओ वा जाणुयपुत्तो'[3] वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा एक्काइस्स रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए[4], तस्स णं एक्काई रट्ठकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

५४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[5] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

५५. तए णं विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया 'सएहिं-सएहिं'[6] गिहेहिंतो[7] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव एक्काई-रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एक्काई[8]-रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगायंकाणं[9] निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता एक्काई-रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणाहिं[10] य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहिं[11] य अवदहणाहिं[12] य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य बत्थिकम्मेहि य निरूहेहिं[13] य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरबत्थीहिं[14] य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य बल्लीहि य[15] मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए ॥

---

१. एक्काइयस्स (घ)।
२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
३. जाणओ वा जाणुपुत्तो (ख, ग, घ)।
४. उवसमित्तए (क)।
५. वि० १।१।५३।
६. सएहिंतो (क्व)।
७. गेहेहिंतो (क)।
८. एगाती (क)।
९. रोगाणं (ख, ग, घ)।
१०. उवट्टणेहि (ख)।
११. सेयणाहि (क); सेवणेहि (ख)।
१२. अवदहणाहिं (क, ख, ग); अवदहणेहि (घ)।
१३. निरुंभेहि (ग); निरुहेहि (वृ)।
१४. सिरोबत्थीहि (वृ)।
१५. × (ख, ग, घ)।

५६. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्ताए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

५७. तए णं एक्काई रट्ठकूडे वेज्ज-पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसह-भेसज्जे[1] सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य[2] •कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य, पुरे य° अंतउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे रज्जं च रट्ठं च[3] •कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च° आसा-एमाणे[4] पत्थेमाणे पीहेमाणे[5] अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्को-सेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु[6] नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

मियापुत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

५८. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ।।

५९. तए णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला[7] •विउला कक्कसा पगाढा चंडा दुक्खा तिव्वा° दुरहियासा[8] जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए[9] उववण्णे, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था ।।

६०. तए णं तीसे मियाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए[10] जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे[11]—एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा थेज्जा वेसासिया अणुमया आसि । जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे, तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था । नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नामं वा गोयं वा गिण्हित्तए[12], किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? तं सेयं खलु मम एयं गब्भं वहूहिं गब्भसाडणाहि य

---

१. निवट्ठोसह° (क्व) ।
२. सं० पा०—रट्ठे य जाव अंतेउरे ।
३. सं० पा०—रट्ठं च ।
४. आसयमाणे (क); आसायमाणे (ख, घ) ।
५. वीहेमाणे (घ) ।
६. नरएसु (ग) ।
७. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।
८. जलंता (क, ग, घ) ।
९. पुत्तत्ताए (क) ।
१०. कुडुंबजागरियं (क) ।
११. समुप्पज्जित्था (घ) ।
१२. गिण्हित्तए वा (क) ।

पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य पाडणाणि य गालणाणि य मारणाणि य खायमाणी य पियमाणी[1] य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा ॥

६१. तए णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंवसा तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ ॥

६२. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भितरप्पवहाओ,[2] अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कण्णंतरेसु, दुवे दुवे अच्छिअंतरेसु, दुवे दुवे नक्कंतरेसु, दुवे दुवे धमणिअंतरेसु अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयं च सोणियं च 'परिसवमाणीओ-परिसवमाणीओ'[3] चेव[4] चिट्ठंति ॥

६३. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भूए। जे[5] णं से दारए आहारेइ, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ[6], पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणमइ, तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥

६४. तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया जातिअंधे[7] •जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती° आगितिमेत्ते ॥

६५. तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया! तुमं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ॥

६६. तए णं सा अम्मधाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी! मियादेवी नवण्हं मासाणं[8] •बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया—जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले

---

१. पीयमाणी (ख, ग, घ)।
२. गब्भंतर° (क, ग); अब्भंतर° (ख)।
३. परिस्सवमाणीओ (क)।
४. × (क, घ)।
५. जं (क)।
६. विद्धसेति (घ)।
७. सं० पा०—जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते।
८. सं० पा०—मासाणं जाव आगितिमेत्ते।

हुंडे य वायव्वे। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती° आगितिमेत्ते।

तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विगा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए[1] उज्झाहि। तं संदिसह णं सामी! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा॥

६७. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियं देविं एवं वयासी—देवाणुप्पिए! तुब्भं 'पढमे गब्भे'[2]। तं जइ णं तुमं एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तो णं तुब्भं पया नो थिरा भविस्सइ, तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुब्भं पया 'थिरा भविस्सइ'[3]॥

६८. तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडि-जागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ॥

६९. एवं खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरा पोराणाणं[4] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कं-ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं° पच्चणुभवमाणे विहरइ॥

मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

७०. मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव[5] जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ[6]।

से णं तत्थ सीहे भविस्सइ—अहम्मिए[7] •बहुनगरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी° साहसिए सुबहुं पावं[8] •कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणइ, समज्जिणित्ता कालमासे

---

१. उक्करुडियाए (घ)।
२. पढमगब्भे (क, ख, ग); पढमं गब्भे (क्व)।
३. नो अथिरा भविस्संति (क, ख)।
४. सं० पा०—पोराणाणं जाव पच्चणुभव-माणे।
५. इहं (क)।
६. पयाहिति (क)।
७. सं० पा०—अहम्मिए। जाव साहस्सिए। सिंहवर्णनत्वात् 'अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई' इत्यादिनि विशेषणानि अन्यत्रोक्तान्यपि इह न घटन्ते।
८. सं० पा—पावं जाव समज्जिणइ।

कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु[1] •नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिइ । तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवम[3]•ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइत्ताए उववज्जिहिइ° ।

से ण तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ । तत्थ वि कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवम[3]•ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ° ।

से णं तओ सीहेसु, तयाणंतरं चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थीओ, छट्ठीए, मणुओ, अहेसत्तमाए । तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ-कच्छभ-गाह-मगर-संसुमाराईणं अद्धतेरस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइं, तत्थ णं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु बेइंदिएसु वणप्फइ-कडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु[4] अणेगसयसहस्सखुत्तो[5] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अण्णया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीणमट्टियं खंणमाणे तडीए[6] पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए[7] पच्चायाइस्सइ ।।

से णं तत्थ उम्मुक्क[8]•बालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ ।

से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए[9] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त°बंभयारी ।

---

१. सं० पा०—°ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ ।
२. सं० पा०—सागरोवम° ।
३. सं० पा० सागरोवम° ।
४. पुढवी (क, ख, ग, घ) ।
५. सं० पा०—°खुत्तो° ।
६. तडीए पडीए (घ) ।
७. पुमत्ताए (ख) ।
८. सं० पा—उम्मुक्क जाव जोव्वणग° ।
९. रियासमिते (क); सं० पा०—इरियासमिए जाव बंभयारी ।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उव्ववज्जिहिइ।
से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति—अड्ढाइं[1] अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति। जहा दढपइण्णे[2] जाव[3] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ॥

निक्खेव-पदं

७१. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

--त्ति बेमि॥

---

१. पू०—ओ० सू० १४१।
२. दढपइन्ने सच्चेव वत्तव्वया कलाओ जाव (क, ख, ग, घ)
३. ओ० सू० १४२-१५४।
४. ना० १।१।७।

बीयं अज्झयणं

उज्झियए

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स[2] समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे[3] नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[4] ॥

३. तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूइपलासे नामं उज्जाणे होत्था ॥

४. तत्थ णं दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ॥

५. तत्थ णं वाणियगामे नयरे[5] मित्ते नामं राया होत्था—वण्णओ[6] ॥

६. तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरी नामं देवी होत्था—वण्णओ[7] ॥

७. तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था—अहीण[8]-•पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार-कंत-पिय-दंसणा °सुरूवा बावत्तरिकलापंडिया[9]

---

१. ना० १।१।७ ।

२. अज्झयणस्स दुहविवागाणं (ख, ग, घ) ।

३. वाणियग्गामे (ख, ग. घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. × (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १४ ।

७. ओ० सू० १५ ।

८. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।

९. चउसट्ठीकलापंडिया (ना० १।३।८); 'बावत्तरीकलापंडिय'त्ति लेखाद्या शकुनिरुत-पर्यन्ता गणितप्रधानाः कलाःप्रायः पुरुषाणा-मेव अभ्यासयोग्याः । स्त्रीणां तु विज्ञेया एव प्रायः (वृ) ।

चउसट्ठिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा बत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा गीयरइगंधव्वणट्टकुसला संगय-गय[1]-•भणिय हसिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला ° सुंदरथण[2]-•जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलासकलिया ° ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणीया कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था। बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं[3] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी ° विहरइ ॥

८. तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे[4] ॥

९. तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था[5] ॥

१०. तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था—अहीण[6]-•पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे ° सुरूवे ॥

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे[7] परिसा निग्गया। राया निग्गओ, जहा कूणिओ[8] निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया राया य गओ ॥

गोयमेण उज्झिययस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमगोत्तेणं जाव[9] संखित्तविउलतेयलेसे छट्ठंछट्ठेणं[10] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१३. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता

---

१. सं० पा०—संगयगय; पू०—ना० १।३।८ पादटिप्पणमपि।

२. सं० पा०—सुंदरथण ° ।

३. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।

४. पू०—ओ० सू० १४१।

५. होत्था। अहीण (घ)।

६. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवे।

७. समोसरिए (क); समोसरणं (ग)।

८. ओ० सू० ५५-६९।

९. ओ० सू० ८२।

१०. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव।

नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

१४. तएण भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे ।

तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियकच्छे उद्दामिय-घंटे नाणामणिरयण-विविह-गेवेज्जउत्तरकंचुइज्जे पडिकप्पिए झयपडागवर-पंचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगुडे ओसारियपक्खरे उत्तरकंचुइय-ओचूलामुहचंडाधर[1]-चामर-थासग-परिमंडिय-कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे[2] विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे ।

तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंधणं उक्खित्त[3]-कण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झ[4]-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरसएहिं[5] हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ[6]—नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ[7] राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति ॥

१५. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं इमे पुरिसे[8] •पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं

---

१. चूला° (ख) ।
२. पिणिद्ध° (क, ख, ग) ।
३. उक्खत्त (क, ख, ग); उक्कत्त (घ) ।
४. बद्ध (क, ख) ।
५. कक्खरग° (क, ग); कक्कर° (ख, घ) ।
६. पडिसुणेइ (क्व) ।
७. केयी (क, घ) ।
८. सं० पा०—पुरिसे जाव निरयपडिरूविय ।

पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे° निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं[1] •पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ,पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ,आलोएत्ता भत्तपाणं° पडिदंसेइ,पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे वाणियगामे नयरे जाव[2] तहेव सव्वं निवेएइ[3]॥

१६. से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि[4]? •किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं° पच्चणुभवमाणे विहरइ?

उज्झिययस्स गोत्तासभव-वण्णग-पदं

१७. एवं[5] खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे[6] वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[7]॥

१८. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुनंदे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[8]॥

१९. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे गोमंडवे होत्था—अणेगखंभसयसंनिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे॥

२०. तत्थ णं बहवे नगरगोरूवा सणाहा य अणाहा य 'नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य'[9] पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसंति॥

२१. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था—अहम्मिए जाव[10] दुप्पडियाणंदे॥

---

१. स० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ।
२. वि० १।२।१३-१५।
३. वेएइ (क, ख, ग)।
४. सं० पा०—आसि जाव पच्चणुभवमाणे।
५. पू०—वि० १।१।४३।
६. भरहे (क)।
७. पू०—ओ० सू० १।
८. पू०—ओ० सू० १४।
९. नगरवलद्दा य नगरपडियाओ य महिसिओ य य वसभाण (ग)।
१०. वि० १।१।४७।

२२. तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा[1] ॥

२३. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णदा कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ॥

२४. तए णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए - धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ[2], •संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले °, जाओ णं बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य[3] •अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि[4] य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि[5] य तलिएहि य भज्जिएहि[6] य परिसुक्केहि य लावणेहि[7] य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं[8] च पसण्णं च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर[9] •गोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं ° विणिज्जामि त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा[10] पंडुल्लइयमुही[11] ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय[12] •मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया ° झियाइ ॥

---

१. पू०—वि० १।२।७।
२. सं० पा० - अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ।
३. सं० पा० — सणाहाण य जाव वसभाण।
४. कक्कुहेहि (क)।
५. सोल्लिएहि (वृ)।
६. भज्जेहि (ग)।
७. लावणिएहि (क, ग)।
८. सिधुं (ख)।
९. सं० पा०—नगर जाव विणिज्जामि।
१०. दीणविमणहीणा (वृ); दीपविमणवयणा (वृपा)।
११. °मुहा (घ)।
१२. सं० पा०—ओहय जाव झियाइ।

२५. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [उप्पलं कूडग्गाहिणिं ?] ओहय[2]•मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं झियायमाणिं° पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय[3]•मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियासि ?

२६. तए णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ,कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं बहूणं[4] •नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य° लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति ।

तए णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि[5] •सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुही ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियामि ।।

२७. तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पलं भारियं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय[6]•मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियाहि । अहं णं तहा करिस्सामि[7] जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ—ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ ।।

२८. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि[8] एगे अबीए[9] सण्णद्ध[10]-•बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहिया-

---

१. कूडग्गाही (क, ख) ।
२. सं० पा०—ओहय जाव पासइ ।
३. सं० पा०—ओहय जाव झियासि ।
४. सं० पा०—बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहि ।
५. सं०पा०—अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि ।
६. सं० पा०—ओहय° ।
७. करीहामि (क) ।
८. अड्ढ° (क, ग) ।
९. अव्वितीए (ग) ।
१०. सं० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणे ।

उह°प्पहरणे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता 'हत्थिणाउरं नयरं'[1] मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागए बहूणं नगरगोरूवाणं[2] •सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य –अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदइ[3], •अप्पेगइयाणं थणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं वसणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं छेप्पा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ककुहे छिंदइ, अप्पेगइयाणं वहे छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णे छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासा छिंदइ, अप्पेगइयाणं जिब्भा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ओट्ठे छिंदइ°, अप्पेगइयाण कंबलए छिंदइ, अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ[4], वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ ॥

२९. तए णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी तं दोहलं विणेइ ॥

३०. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला[5] संपण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

३१. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥

३२. तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया [चिच्ची ?] सद्देणं[6] विघुट्ठे[7] विस्सरे[8] आरसिए ॥

३३. तए णं तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा[9] •सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगर°वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था[10] ॥

३४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति – जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स[11] दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे

---

१. हत्थिणाउरे नयरे (क्व) ।
२. सं• पा०—नगरगोरूवाणं जाव वसभाण ।
३. सं० पा—छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं ।
४. विगत्तेत्ति (क) ।
५. वोच्छिन्न° (ख, घ) ।
६. ३४ सूत्रे पुनरावर्त्तने 'चिच्चीसद्देणं' इति पदमस्ति । तदत्र कथं न स्यात् ?
७. वुट्ठे (ख); विदुट्ठे (ग) ।
८. वीसरेणं (ख); चिच्चीसरे (ग); विसरे (घ) ।
९. सं० पा०—नगरगोरूवा जाव वसभा ।
१०. विप्पलाइत्था (क, घ) ।
११. तस्स (क) ।

नयरे बहवे नगरगोरूवा[1] •सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य° भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए गोत्तासे नामेणं ॥

३५. तए णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाए यावि होत्था ॥

३६. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

३७. तए णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयमयकिच्चाइं करेइ ॥

३८. तए णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए ठवेइ ॥

३९. तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था—अहम्मिए जाव[2] दुप्पडियाणंदे ॥

४०. तए णं से गोत्तासे[3] कूडग्गाहे[4] कल्लाकल्लिं अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए जाव[5] गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ 'निज्जाइ, निज्जाइत्ता'[6] जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य जाव[7] वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गेहे तेणेव उवागए ॥

४१. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहिं य तलिएहिं य भज्जिएहिं य परिसुक्केहिं य लावणेहिं य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

४२. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए[8] कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

उज्झियस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

४३. तए णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया[9] यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति[10] ॥

---

१. सं० पा०—नगरगोरूवा भीया ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. गोत्तासे दारए (क, ख, ग, घ) ।

४. × (क) ।

५. वि० १।२।१४ ।

६. निग्गच्छइ २ (घ) ।

७. वि० १।२।२८ ।

८. अट्टदुहट्टवसट्टे (घ) ।

९. °निहुया (क, घ); निड्डुया (ग); नश्यत्प्रसूतिका निंदुः (अभिधान चिन्तामणि ३।१९३) ।

१०. तस्याः इति गम्यम् (वृ) ।

४४. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

४५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥

४६. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए[1] उज्झावेइ, उज्झावेत्ता दोच्चं पि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ[2] ॥

४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं[3] च चंदसूरदंसणं[4] च जागरियं च महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करेंति ॥

४८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसाहे अयमेयारूवं[5] गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झियए नामेणं ॥

४९. तए णं से उज्झियए दारए पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए मज्जणधाईए मंडणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए][6] जहा दढपइण्णे जाव[7] निव्वायनिव्वाघाय-गिरिकंदरमल्लीणे व्व चंपगपायवे सुहंसुहेणं विहरइ ॥

५०. तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं[8] गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए ॥

५१. तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

५२. तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्दपोयविवत्तियं[9] निब्बुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेंति, ते तहा हत्थनिक्खेवं च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंतं अवक्कमंति ॥

५३. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दपोयविवत्तियं निब्बुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएणं अप्फुण्णा

---

१. उक्करुडियाए (ग) ।
२. संवड्ढेमाणीति (क) ।
३. ठियपडियं (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।
४. चंदसूरपासणियं (वृ) ।
५. इमेयारूवं (घ) ।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तर पृ० १५१, १५२ ।
८. भंडगं (घ) ।
९. लवणसमुद्दे पोय० (क, ख, ग, घ) ।

समाणी परसुनियत्ता इव[1] चंपगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवडिया ॥

५४. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी बहूहिं मित्त[2]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं० परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥

५५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता ॥

५६. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं साओ गिहाओ निच्छुभंति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति ॥

५७. तए णं से उज्झियए दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिंघाडग[3] - •तिग - चउक्क - चच्चर - चउम्मुह-महापह०पहेसु जूयखलएसु[4] वेसघरएसु[5] पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥

५८. तए णं से उज्झियए दारए अणोहट्टए[6] अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी 'चोर-जूय'[7]-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥

५९. तए णं से उज्झियए अण्णया कयाइ कामज्झयाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे जाए यावि होत्था, कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

६०. तए णं तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो संचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ॥

६१. तए णं से मित्ते राया अण्णया कयाइ 'उज्झियए दारए'[8] कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता कामज्झयं गणियं अब्भितरियं[9] ठवेइ ठवेत्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

६२. तए णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे[10]

---

१. विव (क्व) ।
२. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडा ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. जूयखंधएसु (क) ।
५. वेसियाघरएसु (घ) ।
६. अणोहट्टिए (क, ख) ।
७. वृत्तौ 'चोर-जूय' इति पदे व्याख्याते नरूस्तः ।
८. उज्झियदारए (क, घ); अत्र विभक्ति-व्यत्ययो दृश्यते, अन्यथा व्याकरणदृष्ट्या 'उज्झिययं दारयं' इति पाठो युक्तः स्यात् ।
९. अब्भितरयं (ख, घ) ।
१०. निच्छुभमाणे समाणे (क); निच्छुभे समाणे (घ) ।

कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से उज्झियए दारए अण्णया कयाइ 'कामज्झयाए गणियाए'[1] अंतरं[2] लभेइ, लभेत्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

६४. इमं च णं मित्ते राया ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते जेणेव कामज्झयाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं 'उज्झियगं दारगं'[3] कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं[4] पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग[5]-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडग-बंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

६५. एवं खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरा[6] •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६६. उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! उज्झियए दारए पणुवीसं[7] वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥

६७. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥

६८. से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे

---

१. कामज्झियागणियं (घ) ।
२. अंतराणि (ख) ।
३. उज्झियए दारए (क, ख, ग, घ) ।
४. विहरमाणं (क, ख, ग) ।
५. भग्ग (क) ।
६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।
७. पणवीसं (ग) ।

जाए-जाए वाणरपेल्लए वहेइ। तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे[1] कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नयरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए[2] पच्चायाहिइ ॥

६९. तए णं तं दारयं अम्मापियरो जायमेत्तकं वड्ढेहिंति[3], नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति ॥

७०. तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेहिंति—होउ णं अम्हं इमे दारए पियसेणे नामं नपुंसए ॥

७१. तए णं से पियसेणे नपुंसए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ॥

७२. तए णं से पियसेणे नपुंसए इंदपुरे नयरे बहवे राईसर[4]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभियओ बहूहि य विज्जापओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णपओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि आभिओगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥

७३. तए णं से पियसेणे नपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एक्कवीसं वाससयं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। ततो सिरीसिवेसु, संसारो तहेव जहा पढमे जाव[5] •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्तातत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।° से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ अण्णया कयाइ गोट्ठिल्लएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए[6] पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे जाव[7] अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

७४. [8]•एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं दुहविवागाणं बिइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। —त्ति बेमि° ॥

---

१. एयसमुदाचारे (वृ)।
२. पुमत्ताए (क, ग)।
३. वड्ढेहिंति (क)।
४. सं० पा०—राईसर जाव पभियओ।
५. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी।
६. पुमत्ताए (क, ग)।
७. वि० १।१।७०।
८. सं० पा०—निक्खेवो।
९. ना० १।१।७।

तइयं अज्झयणं

अभग्गसेणे

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[3] ।।

३. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अमोहदंसी उज्जाणे ।।

४. तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था ।।

५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महब्बले नामं राया होत्था ।।

६. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवि-संसिया, एत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था—विसमगिरिकंदर-कोलंब-संनिविट्ठा वंसीकलंक-पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अब्भितर-पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सुबहुस्स[4] वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ।।

७. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ—अहम्मिए[5] •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोइ अधम्मपलज्जणे अधम्मसील-समुदायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ—हण-छिंद-भिंद-वियत्तए°

---

१. सं० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुबहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिए जाव लोहियपाणी ।

लोहियपाणी बहुनयरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्दवेही असि-लट्ठि-पढममल्ले। से णं तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं[1] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ° विहरइ ॥

८. तए णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण[2] य संधिच्छेयगाण[3] य खंडपट्टाण[4] य, अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था ॥

९. तए णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य 'ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे'[5] 'विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे'[6] तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे[7] करेमाणे विहरइ, महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गेण्हइ ॥

१०. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरी नामं भारिया होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा[8] ॥

११. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[9] ॥

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया य गओ ॥

गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव[10] 'रायमग्गंसि ओगाढे'[11], तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ[12], अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ[13], अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ – सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए[14]। तेसिं च[15] णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ—अवओडय[16] •बंधणं उक्खित्त-कण्ण-नासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झकरकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडिय-

---

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।
२. गंठिभेयाण (क, ख, ग, घ)।
३. संधिच्छेयाण (क, ख, ग, घ)।
४. खंडपाडियाण (वृपा)।
५. उवीलेमाणे २ (घ, वृ)।
६. विद्धंसेमाणे २ अत्थापहारेहिं (ख); अत्थापहारेहि य विद्धंसेमाणे २ (घ)।
७. × (क, वृ)।
८. पू०—ओ० सू० १५।
९. पू०—वि० १।२।१०।
१०. वि० १।२।१२-१४।
११. रायमग्गं समवगाढे (ख, घ); रायमग्गं समोसढे (ग)।
१२,१३,१४, पू०—वि० १।२।१४।
१५. × (क, ख, ग, घ)।
१६. सं०पा०—अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं।

गातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरसएहिं हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपड-हएणं° उग्घोसिज्जमाणं [इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति[1] ?] ॥

१४. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंसि चच्चरंसि निसियावेंति, निसियावेत्ता अट्ठ चुल्लपिउए अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं 'तासेमाणा-तासेमाणा'[2] कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति ।

तयाणंतरं च णं दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति,[3] •घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति° ।

एवं तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, बारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया, चोद्दसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं[स्स ?][4] मित्त-नाइ-नियग-सयणसंबंधि-परियणं [स्स ?] अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति ॥

१५. तए णं 'भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता'[5] अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे[6]—•अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु पुरिमताले नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरिम-ताले नयरे मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ जाव[7] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! '•तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पुरिमताले नयरे जाव[8] तहेव सव्वं निवेएइ° ॥

---

१. द्रष्टव्यम् —वि० १।२।१४ सूत्रम् ।

२. तालेमाणा २ (घ) ।

३. सं० पा०—घाएंति २ ।

४. पूर्वक्रमेण अत्रापि षष्ठी विभक्तिर्युज्यते ।

५. से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासइ । (क, ख, ग, घ) । १।१।४१ तथा १।२।१५ सूत्रानुसारेण अयं पाठो लिखितः ।

६. सं० पा०—समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए ।

७. वि० १।२।१५ ।

८. सं० पा०—तं चेव जाव से णं ।

९. वि० १।३।१३-१५ ।

१६. से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी[1] ? •किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ?

अभग्गसेणस्स निन्नयभव-वण्णग-पदं

१७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥

१८. तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिओदिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥

१९. तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडय[2]-वाणियए होत्था—अड्ढे जाव[3] अपरिभूए, अहम्मिए[4] •अधम्माणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणंदे ॥

२०. तस्स णं निन्नयस्स अंडय-वाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्ला-कल्लिं कुद्दालियाओ य पत्थियपिडए[5] य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नयरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभि-अंडए य वगिअंडए य मयूरिअंडए य कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडाइं[6] गेण्हंति, गेण्हित्ता पत्थियपिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नए अंडवाणियए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणेंति ॥

२१. तए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे काइअंडए य जाव[7] कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडए[8] तवएसु य कवल्लीसु य कंडुसु[9] य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति भज्जेंति सोल्लेंति, तलेत्ता भज्जेत्ता सोल्लेत्ता य रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अप्पणा वि णं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं

---

१. सं० पा०—आसी जाव विहरइ ।
२. अंड (क, ग) ।
३. ओ० सू० १४१ ।
४. सं० पा०—अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।
५. पत्थियापडिए (क, ख, ग, घ) ।
६. अंडयाइं (क) ।
७. वि० १।३।२० ।
८. अंडयाइं (क) ।
९. कंदुसु (क); कंदूएसु (ग) ।

च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

२२. तए णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं[1] सत्तसागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२३. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२४. तए णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए— धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ[2] 'जाओ णं'[3] बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं, अण्णाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया[4] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया[5] पुरिसनेवत्था[6] सण्णद्ध-बद्ध[7]•वम्मियकवइया उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्धगेवेज्जा विमलवरबद्ध-चिंधपट्टा गहियाउह°प्पहरणावरणा भरिएहिं, फलएहिं निक्कट्ठाहिं[8] असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं अंसागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं[9] दामाहिं[10], ओसारियाहिं[11] ऊरुघंटाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं[12] महया उक्किट्ठि[13]-•सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभियमहा°समुद्दरवभूयं पिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिएज्जामि[14]

---

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ)।
२. पू०—वि० १।२।२४।
३. जाणं (क, ख, ग, घ)।
४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।
५. °गयाओ (ख, ग, घ)।
६. °नेवत्थिया (क, ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा°।
८. निक्किट्ठाहिं (ख)।
९. समुल्लासियाहिं (वृ)।
१०. दामाहिं दाहाहिं (ख); दाहाहिं (वृपा)।
११. लंबियाहिं (क, ग)।
१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ)।
१३. सं० पा०—उक्किट्ठि जाव समुद्द°; उक्किट्ठ (ग)।
१४. विणेज्जामि (क); विणीज्जामि (ख, ग, घ)।

त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा जाव[1] अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ ॥

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिभारियं ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव भूमिगयदिट्ठीया झियासि ?

२६. तए णं सा खंदसिरी विजयं चोरसेणावइं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूए जाव[3] भूमिगयदिट्ठीया झियामि ॥

२७. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म खंदसिरिभारियं एवं वयासी—अहासुहं देवाणुप्पिए ! त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

२८. तए णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठा बहूहिं मित्त[4]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं°, अण्णाहि य बहूहिं चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया जाव[5] विभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवइया जाव[6] आहिंडमाणी दोहलं विणेइ ॥

२९. तए णं सा खंदसिरिभारिया संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला[7] संपण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

३०. तए णं खंदसिरी चोरसेणावइणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥

३१. तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं[8] करेइ ॥

३२. तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता जाव[9] तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ एवं वयासी—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभग्गसेणे नामेणं ।

१. वि० १।२।२४ ।
२. वि० १।२।२५ ।
३. वि० १।३।२४ ।
४. सं० पा०—मित्त जाव अण्णाहि ।
५. वि० १।३।२४ ।
६. वि० १।३।२४ ।
७. वोच्छिण्ण° (क, ख, घ) ।
८. ठितिपडितं (क, वृ) ।
९. ना० १।७।६ ।

३३. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए जाव[1] परिवड्ढइ ॥

३४. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था। 'अट्ठ दारियाओ जाव अट्ठओ दाओ। उप्पिं भुंजइ'[2] ॥

३५. तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

३६. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता केणइ[3] कालेण अप्पसोए जाए यावि होत्था ॥

३७. तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अण्णया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया-महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति ॥

३८. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव[4] महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गिण्हइ ॥

३९. तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायणाहिं[5] ताविया[6] समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं जाव[7] निद्धणं करेमाणे विहरइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विण्णवित्तए[8] ॥

४०. तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अण्णमण्णेणं[9] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया[10] महब्बलस्स रण्णो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति,

---

१. वि० १।२।४९।

२. 'अट्ठदारियाओ' त्ति, अस्यायमर्थः—'तए ण तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अभग्गसेणं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि अट्ठहिं दारयाहिं सद्धिं एगदिवसेण पाणिं गिण्हाविंसु' त्ति, यावत्करणादिदं दृश्यं—'तए ण तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीईदाणं दलयंति' त्ति 'अट्ठओ दाओ' त्ति अष्टपरिमाणमस्येति अष्टको दायो --दानं वाच्य इति शेषः, स चैवम्—'अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ' इत्यादि यावत् 'अट्ठ पेसणकारियाओ अण्णं च विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंख-सिलप्पवालरत्तरयणमाइयं संतसारसावएज्जं' मिति, 'उप्पिं भुंजइ' त्ति अस्यायमर्थः—'तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुयगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ' त्ति (वृ)।

३. × (क)।

४. वि० १।३।७-९।

५. °घायावणाहिं (ख, ग, घ)।

६. तासिता (क)।

७. वि० १।३।९।

८. निवेयित्तए (क); निवेएत्तए (ग)।

९. अण्णोण्णं (ग)।

१०. उवागया जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागया (ख, ग, घ)।

उवणेत्ता करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावई अम्हे बहूहिं गामघाएहि य जाव[2] निद्धणे करेमाणे विहरइ। तं इच्छामि णं सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तए त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा[3] महब्बलं रायं एयमट्ठं विण्णवेंति ॥

४१. तए णं से महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं[4] पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे[6] तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु दंडं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि[7] ॥

४२. तए णं से दंडे तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

४३. तए णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं[8] सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवएहिं जाव[9] गहियाउह-पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं[10] फलएहिं[11], •निक्कट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं अंसागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दामाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं°, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठि[12]- •सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव° करेमाणे पुरिमतालं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ[13] गमणाए ॥

४४. तए णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागया करयल[14]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु अभग्गसेणं चोरसेणावइं° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया !

---

१. सं० पा०—करयल° ।
२. वि० १।३।९ ।
३. पंजलियडा (क) ।
४. जाणवदाणं (क) ।
५. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे; आसुरत्ते (ग, घ) ।
६. मिसेमिसेमाणे (ख) ।
७. उवणेहिति (क); उवणेहि (ख, ग, घ) ।
८. पुरिसेहिं सद्धिं (क, ग घ) ।
९. वि० १।२।१४ ।
१०. वि० १।३।२४ अस्य स्थाने 'भरिएहिं' इति पाठः। शब्दभेदेपि अनयोः वृत्तिकारेण एक एव अर्थः कृतः—'भरिएहिं' इति हस्तपाशितैः, 'मगइएहिं' ति हस्तपाशितैः ।
११. सं० पा०—फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं ।
१२. उक्किट्ठ (ख, ग, घ); सं० पा०—उक्किट्ठि जाव करेमाणे ।
१३. पाहारेत्थ (क) ।
१४. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि। तए णं से दंडे महयाभडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४५. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म पंच चोरसयाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते जाव[1] तेणेव पहारेत्थ गमणाए[2]। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्तं अंतरा चेव पडिसेहित्तए ॥

४६. तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तहत्ति[3] •एयमट्ठं° पडिसुणेंति ॥

४७. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता सण्णद्ध-बद्ध[5] •वम्मियकवएहिं उप्पीलियसरासणपट्टीएहिं पिणद्धगेवेज्जेहिं विमलवरबद्ध-चिंधपट्टेहिं गहियाउह°पहरणेहिं[6] मगइएहिं जाव[7] उक्किट्ठि-सीहनाय-बोल-कलकलरवेणं[8] पच्चावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए तं दंडं पडिवालेमाणे-पडिवालेमाणे चिट्ठइ ॥

४८. तए णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ॥

४९. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हय-महिय[9]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागं दिसोदिसिं° पडिसेहेति[10] ॥

५०. तए णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय-[11]•महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागे दिसोदिसिं° पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए

---

१. वि० १।३।४४।
२. आगते ततेणं अभग्गसेणे ताइं पंचचोरसयाइं एवं वयासी (क,ख,ग);गमणाए आगते ततेणं से अभग्गसेणे ताइं पंचचोरसयाइं एवं वयासी (घ)।
३. सं० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति।
४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।
५. सं० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव पहरणेहिं।
६. पहरणे (क, घ)।
७. वि० १।३।४३।
८. पू०—१।३।४३।
९. सं० पा०—महिय जाव पडिसेहेति।
१०. विप्पडिसेहेइ (वृ)।
११. सं० पा०—हय जाव पडिसेहिए।

अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए, नो खलु से सक्का केणवि[2] सुबहुएणवि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा जोहबलेण वा 'रहबलेण वा चाउरंगेणं पि'[3] [सेण्णबलेणं ?] उरंउरेणं गिण्हित्तए। ताहे सामेण य[4] भेएण य[5] उवप्पयाणेण य[6] विस्सम्भमाणेउं पवत्ते[7] यावि होत्था। जे वि य से अब्भिंतरगा सीसगभमा[8], मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं च विउलेणं-धण-कणग-रयण-संतसार-सावएज्जेणं[9] भिंदइ, अभग्गसेणस्स य[10] चोरसेणावइस्स अभिक्खणं-अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं वीसम्भमाणेइ ॥

५१. तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालियं कूडागारसालं कारेइ[11] - अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

५२. तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे उस्सुक्कं[12] •उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंगं अमिलाय-मल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं पमुइयपक्कीलिया-भिरामं जहारिहं° दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, उग्घोसावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए। तत्थ णं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल[13]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयह[14]—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था[15] ?

---

१. सं० पा०—करयल° ।
२. केणइ (ख, ग, घ) ।
३. × (क) ।
४,५,६. वा (ग) ।
७. पयत्ते (क) ।
८. सीसगसमा (घ); तान् इति शेषः (वृ) ।
९. सावएजेणं (क, ग) ।
१०. × (क, ग) ।
११. करेइ (क, ख, घ) ।
१२. सं० पा०—उस्सुक्कं जाव दसरत्तं; उस्सुंकं (क) सर्वत्र ।
१३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
१४. वदाह (क) ।
१५. गच्छित्ता (क, ख, ग, घ); मुद्रितवृत्तौ

५३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रण्णो करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं[2] अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल[3]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव[4] दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?

५४. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुरिमतालं नयरं सयमेव गच्छामि। ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥

५५. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त[5]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं° परिवुडे ण्हाए[6] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता महत्थं[8] •महग्घं महरिहं रायारिहं° पाहुडं उवणेइ ॥

५६. तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं[8] •महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरासेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं[10] दलयइ ॥

५७. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महब्बलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ॥

५८. तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

'उदाहु सयमेव गच्छित्ता उताहो स्वयमेव गमिष्यसि'। हस्तलिखितवृत्तौ–'गच्छित्था स्वयमेव गमिष्यथ' इत्यस्ति।

१. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति।

२. नातिविक° (ख); नाइविग° (वृ)।

३. सं० पा०—करयल जाव एवं।

४. वि० १।३।५२।

५. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडे।

६. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।

७. सं० पा०—करयल°।

८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।

९. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ।

१०. वसहिं (क)।

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालाए उवणेह ॥

५९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ° जाव[2] उवणेंति ॥

६०. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त[3]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं ° सद्धिं संपरिवुडे ण्हाए जाव[4] सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे पमत्ते विहरइ ॥

६१. तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे[5] देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह ॥

६२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं ° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता महब्बलस्स रण्णो उवणेंति ॥

६३. तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

६४. एवं खलु गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरा पोराणाणं[7] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥

अभग्गसेणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६५. अभग्गसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस[8]•सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए ° उववज्जिहिइ ।

---

१. सं० पा०—करयल ° ।
२. वि० १।३।५८ ।
३. सं० पा०—मित्त ° ।
४. वि० १।३।५५ ।
५. तुमं (ग) ।
६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।
७. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।
८. सं० पा०—उक्कोस नेरइएसु ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव[1] •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।°

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ सोयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावो, एवं जहा पढमे जाव[2] अंतं काहिइ॥

निक्खेव-पदं

६६. [3]•एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं दुहविवागाणं तइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥°

---

१. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी।
२. वि० १।१।७०।
३. सं० पा०—निक्खेवओ।
४. ना० १।१।७।

चउत्थं अज्झयणं

सगडे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते[1] ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी° — एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएण साहंजणी नामं नयरी होत्था — रिद्धत्थिमियसमिद्धा ।।

३. तीसे णं साहंजणीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देवरमणे नामं उज्जाणे होत्था ।।

४. तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था — पोराणे ।।

५. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे नामं राया होत्था — महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ।।

६. तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था — साम-भेय-दंड-उवप्पयाण-नीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू[3] ।।

७. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरिसणा नामं गणिया होत्था — वण्णओ[4] ।।

८. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभद्दे नामं सत्थवाहे होत्था — अड्ढे ।।

९. तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था — अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा ।।

१०. तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था — अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे ।।

---

१. सं० पा० — चउत्थस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू० — ना० १।१।१६ ।

४. वि० १।२।७ ।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए[1]। परिसा राया य निग्गए। धम्मो कहिओ। परिसा गया॥

सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[2] रायमग्गं[3] ओगाढे। तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य बहवे पुरिसे पासइ[4]। तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं सइत्थियं पुरिसं अवओडयबंधणं उक्खित्त[5]-कण्णनासं जाव[6] खंडपडहेण उग्घोसिज्जमाणं[7] •इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया! सगडस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति॥

सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पदं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स° चिंता तहेव जाव[8] भगवं वागरेइ—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं नयरे होत्था॥

१४. तत्थ णं सीहगिरी नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे॥

१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अड्ढे जाव[9] अपरिभूए, अहम्मिए जाव[10] दुप्पडियाणंदे॥

१६. तस्स णं छन्नियस्स छागलियस्स बहवे [बहूणि ?] अयाण य एलयाण[11] य रोज्झाण य 'वसभाण य'[12] ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिंहाण य'[13] हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाणि सहस्सबद्धाणि य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं[14] चिट्ठंति।

---

१. समोसरणं (क, ख, घ)।
२. वि० १।२।१२-१४।
३. रायमग्गे (ख, घ)।
४. पू०—वि० १।२।१४।
५. उक्खत्त (ख); उक्कड (ग); उवक्खित्त (घ)।
६. वि० १।२।१४।
७. सं० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता।
८. वि० १।२।१५,१६।
९. ओ० सू० १४१।
१०. वि० १।१।४७।
११. एलाण (क, ख, ग, घ)।
१२. पसयाण य (क); × (ख, ग)।
१३. सिंहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण° (घ)।
१४. निरुद्धाइं (क); निरुद्धा (ख, ग)।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा[1] चिट्ठंति[2]।

अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं[3] करेंति, करेत्ता छन्नियस्स छागलियस्स उवणेंति।

अण्णे य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइ य तवएसु य कवल्लीसु य कंदुसु[4] य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोल्लेंति य, तलेत्ता य भज्जेत्ता य सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि य[5] णं से छन्निए छागलिए तेहिं बहूहिं अयमंसेहि य जाव महिसमंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ॥

१७. तए णं से छन्निए छागलिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्त वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे॥

सगडस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८. तए णं सा सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति॥

१९. तए णं से छन्निए छागलिए चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे॥

२०. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया॥

२१. तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेंति, दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवेंति संवड्ढेंति, जहा उज्झियए जाव[6]

---

१. संगोयमाणा (क)।

२. चिट्ठंति। अण्णे य से बहवे पुरिसा अयाण य जाव गिहंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति (क, ग, घ); असौ पाठः नावश्यकः प्रतिभाति। अस्यार्थः पूर्वपाठे समागतोस्ति।

३. कप्पिणी° (ख)।

४. कंडुसु (ख, ग)।

५. × (क)।

६. वि० १।२।४७,४८।

जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव सगडस्स हेट्ठओ ठविए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सगडे नामेणं। सेसं जहा[1] उज्झियए। सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगए, माया वि कालगया। से वि साओ गिहाओ निच्छूढे ॥

२२. तए ण से सगडे दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे[2] *साहंजणीए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूयखलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥

२३. तए णं से सगडे दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥

२४. तए णं से सगडे अण्णया कयाइ° सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ॥

२५. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अब्भितरियं ठवेइ,[3] ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

२६. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे[4] *सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

२७. तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं° अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

२८. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव[5] विभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते[6] जेणेव सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव[7] मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि[8]*-मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभग्गं°

---

१. वि० १।२।४९-५६।

२. सं० पा०—समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए।

३. ठावेइ (क)।

४. सं० पा०—निच्छुभेमाणे अण्णत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं।

५. वि० १।२।६४।

६. मणुस्सवग्गुराए (ख, ग, घ)।

७. वि० १।२।६४।

८. सं० पा०—अट्ठि जाव महियगत्तं।

महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महचंदं रायं° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सगडे दारए ममं अंतेउरंसि[2] अवरद्धे ॥

२९. तए णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी—तुमं चेव णं देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि[3] ॥

३०. तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

३१. तं एवं खलु गोयमा ! सगडे दारए पुरा पोराणाणं[4] •दुचिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

सगडस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३२. सगडे णं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! सगडे णं दारए सत्तावण्णं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अयोमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवतासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥

३३. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे नयरे मातंगकुलंसि जमलत्ताए[5] पच्चायाहिइ[6] ॥

३४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स[7] इमं एयारूवं नामधेज्जं करिस्संति—तं होउ णं दारए सगडे नामेणं, होउ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं ॥

३५. तए णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते[8] भविस्सइ ॥

३६. तए णं सा सुदरिसणावि दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा भविस्सइ ॥

---

१. स० पा०—करयल जाव एवं ।
२. अंतेपुरियंसि (क, घ) ।
३. वत्तेहिं (क, घ) ।
४. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।
५. जुगलत्ताए (घ) ।
६. पयायाहिति (ग) ।
७. निव्वत्तबारसगस्स (क, ख, ग, घ) ।
८. °प्पत्ते अलं भोगसमत्थे यावि (वृ) ।

३७. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सुदरिसणाए भइणीए[1] सद्धि उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥

३८. तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सइ ॥

३९. तए णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ—अहम्मिए जाव[2] दुप्पडियाणंदे, एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[3], संसारो तहेव जाव[4] •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।
से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ ।
से णं तत्थ मच्छबंधिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४०. [5]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं दुहविवागाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि° ॥

---

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।
२. वि० १।१।४७ ।
३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्धं प्रतिभाति ।
४. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी ।
५. सं० पा०—निक्खेवो ।
६. ना० १।१।७ ।

पंचमं अज्झयणं

बहस्सइदत्तो

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी ०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा । बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे । सेयभद्दे जक्खे ।।

३. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[3] । मियावई देवी ।।

४. तस्स णं सयाणियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदयणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[4] जुवराया ।।

५. तस्स णं उदयणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था ।।

६. तस्स णं सयाणियस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले ।।

७. तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था ।।

८. तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[5] ।।

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे[6] ।।

---

१. सं० पा०—पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ ।
२. ना० १।१।७ ।
३. पू०—ओ० सू० १४ ।
४. पू०—वि० १।२।१० ।
५. पू०—वि० १।२।१० ।
६. समवसरणं (क, ख, ग, घ); वि० १।२।११ सूत्राधारेण असौ पाठः स्वीकृतः ।

गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव[1] रायमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्झे[2] पुरिसं। चिंता। तहेव[3] पुच्छइ पुव्वभवं। भगवं वागरेइ—

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभव-वण्णग-पदं

११. एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[4] ॥

१२. तत्थ णं सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू नामं राया होत्था ॥

१३. तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते[5] नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय[6]-यजुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था ॥

१४. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जबलविवड्ढणट्ठयाए कल्ला-कल्लिं[7] एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं, एगमेगं वइस्सदारयं, एगमेगं सुद्ददारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ ॥

१५. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउद्दसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-वइस्स-सुद्दे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ, संवच्छरस्स सोलस-सोलस।

जाहे-जाहे वि य णं जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुज्जइ[8], ताहे-ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं, अट्ठसयं वइस्सदारगाणं, अट्ठसयं सुद्ददारगाणं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवंतगाणं[9] चेव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ। तए णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसेइ[10] वा पडिसेहिज्जइ वा ॥

१६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमाए[11] पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववण्णे ॥

---

१. वि० १।२।१२-१४।
२. × (घ)।
३. पू०—वि० १।२।१४-१६।
४. पू०—ओ० सू० १।
५. महिस्सर० (क)।
६. रिव्वेद (क)।
७. कल्लंकल्लं (क); कल्लाकल्लं (ग)।
८. अभिजुंजइ (ख, ग)।
९. जीवंतकाणं (क); जीवंताणं (ख)।
१०. विद्धंसइ (ख, ग); विद्धंसिज्जइ (क्व)।
११. पंचमीए (ग)।

बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१७. से णं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

१८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स 'इमं एयारूवं'[1] नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं ॥

१९. तए णं से बहस्सइदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए जाव[2] परिवड्ढइ ॥

२०. तए णं से बहस्सइत्ते दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते होत्था। से णं उदयणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए ॥

२१. तए णं से सयाणिए राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

२२. तए णं से उदयणे कुमारे बहूहिं राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥

२३. तए णं ते बहवे राईसर[4]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ उदयणं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ॥

२४. तए णं से उदयणे कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[5] ॥

२५. तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उदयणस्स रण्णो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु अंतेउरे य दिण्णवियारे जाए यावि होत्था ॥

२६. तए णं से बहस्सइदत्ते पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अंतेउरं वेलासु य अवेलासु य कालेसु य अकालेसु य राओ य विआले य पविसमाणे अण्णया कयाइ पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

२७. इमं च णं उदयणे राया ण्हाए जाव[6] विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ[7], •गिण्हावेत्ता

---

१. एमेयारूवं (घ)।
२. वि० १।२।४९।
३. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
४. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
५. पू०—ओ० सू० १४।
६. वि० १।२।६४।
७. सं० पा०—गिण्हावेइ जाव एएणं।

अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडगबंधणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

२८. एवं खलु गोयमा ! बहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोराणाणं[1] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

बहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२९. बहस्सइदत्ते णं भंते ! पुरोहिए[2] इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! बहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्ठिं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे[3] कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[4] •उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव[5] वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए[6] पच्चायाहिइ । बोहिं, सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. •[7]एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं दुहविवागाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

--त्ति बेमि° ॥

---

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।
२. दारए (क, ख, ग, घ) ।
३. सूलिभिण्णे (घ) ।
४. सं० पा०—पुढवीए संसारो तहेव पुढवी ।
५. वि० १।१।७० ।
६. पुमत्ताए (क) ।
७. सं० पा०—निक्खेवो ।
८. ना० १।१।७ ।

छट्ठं अज्झयणं

नंदिवद्धणे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! [1]•समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी ° एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नामं नयरी । भंडीरे उज्जाणे । सुदरिसणे[3] जक्खे । सिरिदामे राया । बंधुसिरी भारिया । पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे—अहीण[4]-•पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे ° जुवराया[5] ।।

३. तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था—'साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू'[6] ।।

४. तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तपुत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण पंचिंदियसरीरे[7] ।।

५. तस्स णं सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नामं अलंकारिए[8] होत्था—सिरिदामस्स रण्णो चित्तं बहुविहं[9] अलंकारियकम्मं[10] करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे यावि होत्था ।।

---

१. सं० पा०—छट्ठस्स उक्खेवओ ।
२. ना० १।१।७ ।
३. सुदरसणे (ख, ग); सुदंसणे (क्व) ।
४. सं० पा०—अहीण जाव जुवराया ।
५. जुगराया (क) ।
६. सामदंड (क,ख,ग,घ); पू०—ना० १।१।१६ ।
७. पू०—वि० १।२।१० ।
८. अलंकारए (क, ख, ग) ।
९. × (क) ।
१०. अलंकारियं कम्मं (क) ।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव[1] परिसा पडिगया ॥

गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[2] रायमग्गमोगाढे । तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे पासइ । तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ जाव[3] नर-नारीसंपरिवुडं ॥

८. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयंसि सीहासणंसि निवेसावेंति ।

तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं बहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंबभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ।

तयाणंतरं च तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयं संडासगं गहाय हारं पिणद्धंति । तयाणंतरं च णं अद्धहारं[4] •पिणद्धंति तिसरियं पिणद्धंति पालंबं पिणद्धंति कडिसुत्तयं पिणद्धंति पट्टं पिणद्धंति मउडं पिणद्धंति° । चित्ता तहेव जाव[5] वागरेइ—

नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पदं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[6] ॥

१०. तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था ॥

११. तस्स णं सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले[7] होत्था—अहम्मिए जाव[8] दुप्पडियाणंदे ॥

१२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—

१३. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे अयकुंडीओ—अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकायंसि अद्दहियाओ चिट्ठंति ॥

---

१. वि० १।२।११ ।
२. वि० १।२।१२-१४ ।
३. वि० १।२।१४ ।
४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्टं मउडं ।
५. वि० १।२।१५,१६ ।
६. पू०—ओ० सू० १ ।
७. चारगपालए (घ) ।
८. वि० १।१।४७ ।

१४. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ अप्पेगइयाओ आसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ– बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठंति ।।

१५. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंडुयाण य पायंडुयाण य हडीण[1] य नियलाण य संकलाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता[2] चिट्ठंति ।।

१६. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण[3] य वेत्तलयाण[4] य चिंचालयाण य छियाण य कसाण य वायरासीण[5] य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

१७. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण[6] य मोग्गराण य कणंगराण[7] य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

१८. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंतीण[8] य वरत्ताण य वागरज्जूण य वालयसुत्तरज्जूण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

१९. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलंवचीरपत्ताण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

२०. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य चम्मपट्टाण य अलीपट्टाण[9] य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

२१. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूईण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण[10] य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

२२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सत्थाण[11] य पिप्पलाण य कुहाडाण[12] य नहच्छेयणाण य दब्भाण[13] य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।।

२३. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरहस्स रण्णो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेए य रायावकारी य अणहारए[14] य वालघायए य विस्संभघायए य जूइगरे[15]

---

१. हडीण (क) ।
२. संनिकिट्ठा (क) ।
३. वेलुलयाओ (ग) ।
४. वेत्तलयाओ (ग) ।
५. पादरासीण (क) ।
६. लउलाण (वृ) ।
७. कणमराण (ख, ग, घ); काणंगराण (वृपा) ।
८. तंताण (ख) ।
९. अलाण (क); अलपडाण (ग); अल्लपल्लाण (मुद्रित वृ); अलीण (हस्त० वृ); अलीघटाण (हस्त० वृ) ।
१०. कोडिल्लाण (ख) ।
११. एकस्यां हस्तलिखितवृत्तौ 'पच्छाण' इति विद्यते ।
१२. कुठाराण (ग) ।
१३. दब्भणाण (ख); डब्भणाण (ग); दब्भतिणाण (घ) ।
१४. अणधारए (क, घ) ।
१५. जूयिकरे (क); जूयगरे (ख, ग) ।

य संडपट्टे[1] य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेगं करेइ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ[2], •अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए ° एलमुत्तं पज्जेइ।

अप्पेगइए हेट्ठामुहए पाडेइ छडछडस्स[3] वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवीलं दलयइ। अप्पेगइए हत्थंडुयाइं[4] बंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए[5] करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ[6], •अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कछिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्ठछिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिब्भछिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसछिण्णए करेइ, अप्पेगइए ° सत्थोवाडियए करेइ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य[7], •अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए ° वायरासीहि य हणावेइ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं[8] दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं[9] छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ[10]।

अप्पेगइए तंतीहि य[11], •अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय ° सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि 'ओचूलं बोलगं'[12] पज्जेइ[13]।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य[14], •अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए ° कलंबचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अब्भंगावेइ।

---

१. खंडपट्टे (क, ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्तं।
३. थलथलस्स (क, घ)।
४. हत्थंडु ° (ख); हत्थंड ° (ख); हत्थियं (घ)।
५. मोडिए (वृ)।
६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए।
७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि।
८. सिर (क)।
९. लउलं (क, घ); नउलं (ख)।
१०. ओकंपावेइ (क)।
११. सं० पा०—तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि।
१२. ओलंबालगं (क); उचूलंपालगं (ख); उचूलंवालगं (ग) उचूलंपाणगं (घ); ओचूल-वालगं (ह० वृ)।
१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभाषा कारयतीति तु भावार्थः (वृ)।
१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलंबचीर-पत्तेहि।

अप्पेगइयाणं निलाडेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दवावेइ[1] अलिए[2] भंजावेइ ।
अप्पेगइए सूईओ य डंभणाणि[3] य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहिं आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमिं कंडुयावेइ[4] ।
अप्पेगइए सत्थेहि य[5] •अप्पेगइए पिप्पलेहि य अप्पेगइए कुहाडेहि य अप्पेगइए° नहच्छेयणेहि य अंगं पच्छावेइ, दब्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहि[6] य वेढावेइ, आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ॥

२४. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं[7] समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

नंदिवद्धणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२५. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रण्णो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए[8] उववण्णे ॥

२६. तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[9] दारगं पयाया ॥

२७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहे इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति—होउ णं अम्हं दारगे नंदिवद्धणे[10] नामेणं ॥

---

१. दलावेइ (क) ।
२. अल (क); अलए (घ) ।
३. दंभणाणि (क, घ) ।
४. कडूयावेइ (ख, ग) ।
५. सं० पा० —सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि ।
६. उल्लवज्झेहि (क); उल्लदब्भेहि (ख); उलदज्झेहि (घ); ओल्लवद्धेहि (ख) ।
७. पावं (क) ।
८. पुमत्ताए (क) ।
९. ओ० सू० १४३ ।
१०. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ); प्रस्तुतागमस्य प्रथमाध्ययनस्य सप्तमे सूत्रे 'नंदी' इति पदमस्ति । वृत्तिकृतात्र 'नंदिवर्द्धन' इति नाम सूचितम्—'नंदी' त्ति सूत्रत्वादेव नंदिवर्द्धनो राजकुमारः (वृ) । प्रस्तुताध्ययनस्य द्वितीये सूत्रे 'पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे' इति पाठोस्ति । अध्ययनपरिसमाप्तौ च वृत्तिकृता पुनरस्यैव नाम्नः उल्लेखः कृतोस्ति—षष्ठाध्ययनविवरणं नंदिवर्द्धनस्याधिकारो हि समाप्तः (वृ) । किंतु अस्याध्ययनस्य सप्तविंशतितमसूत्रादारभ्य मूलपाठे सर्वत्र 'नंदिसेण' नाम्नः उल्लेखोस्ति । स्थानाङ्गसूत्रे (१०।११।१) 'नंदिसेण' नाम्नः उल्लेखोस्ति । द्वयोरप्यागमयोर्वृत्तिकारः अभयदेवसूरिरस्ति । वृत्तिकारस्याभिमतेन प्रस्तुतसूत्रे 'नंदिवर्द्धनः' इति नामैवास्ति—'नंदिसेणे य' त्ति मथुरायां श्रीदामराजसुतो नंदिसेणो युवराजो विपाकश्रुते च नंदिवर्द्धनः श्रूयते (स्थानाङ्गवृत्ति) स्थानाङ्गप्रसिद्धस्य 'नंदिसेण' नाम्नः प्रस्तुतसूत्रे समावेशो जातः । अतएव नाम्नोर्मिश्रणमत्र परिलक्ष्यते ।

२८. तए णं से नंदिवद्धणे[1] कुमारे पंचधाईपरिवुडे जाव[2] परिवड्ढइ ॥

२९. तए णं से नंदिवद्धणे[3] कुमारे उम्मुक्कबालभावे[4] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते° विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्था ॥

३०. तए णं से नंदिवद्धणे[5] कुमारे रज्जे य जाव[6] अंतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥

३१. तए णं से नंदिवद्धणे[7] कुमारे सिरिदामस्स रण्णो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ॥

३२. तए णं से नंदिवद्धणे[8] कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी - तुमं णं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि । तो[9] णं अहं तुमं अद्धरज्जियं करिस्सामि । तुमं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि ॥

३३. तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिवद्धणस्स[10] कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे[11] •अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विगे संजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयल[12] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! नंदिवद्धणे[13] कुमारे रज्जे य जाव[14] अंतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥

३५. तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

---

१. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
२. वि० १।२।४९ ।
३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
४. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ ।
५. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
६. वि० १।१।५७ ।
७,८. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
९. ता (ख, घ); तं (ग) ।
१०. नंदिसेणस्स (क, ख, ग घ) ।
११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
१२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
१३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
१४. वि० १।१।५७ ।

आसुरुत्ते[1] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले° साहट्टु नंदिवद्धणं[2] कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

३६. तं एवं खलु गोयमा ! नंदिवद्धणे[3] कुमारे[4] •पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

नंदिवद्धणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३७. नंदिवद्धणे[5] कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! नंदिवद्धणे[6] कुमारे सट्ठिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव[7]। तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३८. [8]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि° ॥

---

१. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव साहट्टु।
२. नंदिसेणं (क, ख, ग, घ)।
३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ)।
४. पुत्ते (क); सं० पा०—कुमारे जाव विहरइ।
५,६. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ)।
७. पू०—वि० १।१।६९।
८. सं० पा०—निक्खेवो।
९. ना० १।१।७।

सत्तमं अज्झयणं

उंबरदत्तो

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते[1] ! *समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे । 'वणसंडे उज्जाणे'[3] । 'उंबरदत्ते जक्खे'[4] ॥

३. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥

४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गंगदत्ता भारिया ॥

५. तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[5] ॥

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव[6] परिसा पडिगया ॥

गोयमेण उंबरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव[7] जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्प-

---

१. सं० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वणसंडं उज्जाणं (क, ख, ग) ।

४. उंबरदत्तो जक्खो (क) ।

५. पू०—ओ० सू० १४३ ।

६. वि०—१।२।११ ।

७. पू०—वि० १।२।१२-१४ ।

विसइ, अणुप्पविसित्ता तत्थ णं पासइ एगं पुरिसं—कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं[1] भगंदलियं[2] अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोगिलं 'सूयमुहं सूयहत्थं'[3] सूयपायं सडियहत्थंगुलियं सडियपायंगुलियं सडियकण्णनासियं[4] रसियाए य पूएण य थिविथिविंतं[5] वणमुहकिमिउत्तुयंत-पगलंतपूयरुहिरं लालापगलंतकण्णनासं अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं कूवमाणं[6] मच्छियाचडगरपहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गं फुट्टहडाहडसीसं[7] दंडिखंडवसणं खंडमल्लखंडघडहत्थगयं गेहे-गेहे देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासइ। तया भगवं गोयमे ! उच्च-नीय[8]-•मज्झिम-कुलाइं अडमाणे° अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भ-णुण्णाए[9] •समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे° बिलमिव पण्णगभूते[10] अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८. तए णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव[11] पाडलिसंडं नयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं तहेव जाव[12] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

९. तए णं से भगवं गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव[13] पाडलिसंडं नयरं पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं[14] ॥

१०. [15]•तए णं से भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव[16] पाडलिसंडं नयरं उत्तरेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ – कच्छुल्लं[17] ॥

---

१. उदरियं (वृ), मुद्रितवृत्तौ दोउयरियं; दोउरियं (क्व)।
२. भगंदरियं (ग, घ)।
३. सुयमुहं सुयहत्थं (घ)।
४. °नासेयं (क)।
५. थिविथिवेंतं (क)।
६. कूयमाणं (ह० वृ)।
७. फुड० (क)।
८. सं० पा० —नीय जाव अडइ।
९. सं० पा०—अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव।
१०. °भूतेणं (क्व)।
११. वि० १।२।१३,१४।
१२. वि० १।७।७।
१३. वि० १।७।८।
१४. पू०— वि० १।७।७।
१५. सं० पा०—चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे।
१६. वि० १।७।८।
१७. पू०—वि० १।७।७।

११. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता० इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं[1] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु जाव[2] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता० एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि जाव[3] रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे। तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव[4] देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं।

'तए णं'[5] अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव। तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव। तए णं अहं चोत्थ-छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं[6]। चिंता मम॥

१२. [7]•से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?

उंबरदत्तस्स धण्णंतरिभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी०—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे॥

१४. तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था॥

१५. तस्स णं कणगरहस्स रण्णो धण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाढए [तं जहा—१. कुमारभिच्चं २. सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५. जंगोले ६. भूयविज्जे ७. रसायणे ८. वाजीकरणे][8] सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे॥

१६. तए णं से धण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

---

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव एवं।
२. वि० १।२।१५।
३. वि० १।२।१३,१४।
४. वि० १।७।७।
५. तं (क, घ)।
६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा वागरेइ।
८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खगाण[1] य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य—अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं उवदिसइ[2], अप्पेगइयाणं कच्छभमंसाइं, अप्पेगइयाणं गाहमंसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमंसाइं, अप्पेगइयाणं सुंसुमारमंसाइं, अप्पेगइयाणं अयमंसाइं, एवं—एलय[3]-रोज्झ-सूयर-मिग-ससय-गो-महिसमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं तित्तिरमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं वट्टक-लावक-कवोय-कुक्कुड-मयूरमंसाइं उवदिसइ, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं मंसाइं उवदिसइ। अप्पणा वि णं से धण्णंतरी वेज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य, अण्णेहि य बहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-मंसेहि य, मच्छरसएहि य जाव मयूररसएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

१७. तए णं से धण्णंतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

उंबरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८. तए णं सा गंगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिघायमावज्जंति ॥

१९. तए णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूला[4] कक्खदेसभागं अभिसरमाणयाइं[5] मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए।

१. भिक्खुयाण (क, ख); भिक्खुणाण (ग); भिक्खाचरे (घ)।
२. उवदंसेइ (घ)।
३. एला (क, घ); वि० १।४।१६ सूत्रे कतिचन पदानि अधिकानि दृश्यन्ते।
४. थणमूल (क, ख, घ)।
५. अतिसर० (क, ख, ग, घ)।

अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगतरमवि न पत्ता। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्ता, तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करेत्ता जाणुपायपडियाए ओयाइत्तए[2]—जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढिस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी जाव एत्तो एगमवि न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव ओवाइणित्तए॥

२०. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्तं भारियं एवं वयासी—ममं पि णं देवाणुप्पिए! एस चेव मणोरहे कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि? गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ॥

२१. तए णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडलिसंडं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी[3] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं करेइ, करेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरिणीओ[4] पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उंबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता उंबरदत्तं जक्खं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल[5]-•सुकुमाल-गंधकासाइयाए °

---

१. ना० १।१।२४।
२. उव्वाएत्तए (ग); ओवायइत्तए (क्व)।
३. पोक्खरिणी (क); पुक्खरणी (ग)।
४. पुक्खरिणिं (क, ग); पुक्खरणीए (ख)।
५. सं० पा०—पम्हल °।

गायलट्ठी ओलूहइ, ओलूहित्ता सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, परिहेत्ता महरिहं पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं करेइ, करेत्ता धूवं डहइ, डहित्ता जण्णुपायवडिया एवं वयइ—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं[1] •अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढिस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं° ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२२. तए णं से धण्णंतरी वेज्जे तओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे पाडलिसंडे नयरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२३. तए णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ[2] •अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीविय°फले, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता बहूहिं मित्त[3]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं° परिवुडाओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च पुप्फ[4]-•वत्थ गंध-मल्लालंकारं° गहाय पाडलिसंडं नयरं मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता ण्हायाओ[5] •कयबलिकम्माओ कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ताओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्त[6]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं° सद्धिं आसाएंति वीसाएंति परिभाएंति परिभुंजेंति, दोहलं विणेंति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[7] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव दोहलं विणेंति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव दोहलं विणित्तए ॥

२४. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ ॥

२५. तए णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी विउलं

---

१. सं० पा०—तो णं जाव ओवाइणइ ।
२. सं० पा०—ताओ जाव फले ।
३. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडाओ ।
४. सं० पा०—पुप्फ जाव गहाय ।
५. सं० पा०—ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ ।
६. सं० पा०—मित्त जाव सद्धिं ।
७. ना० १।१।२४ ।

असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं परिगेण्हावेइ, परिगेण्हावेत्ता बहूहिं[1] •मित्त-नाइ-नियग-संयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं०[2] ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता[3] जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ जाव[4] धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ ॥

२६. तए णं ताओ मित्त[5]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण०महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति ॥

२७. तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्त[6]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं,० अण्णाहि य बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२८. तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला[7] तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

२९. तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं[8] •बहुपडिपुण्णाणं दारगं० पयाया। ठिइवडिया जाव[9] जम्हा णं अम्हं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं ॥

३०. तए णं से उंबरदत्ते पंचधाईपरिग्गहिए परिवड्ढए ॥

३१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे[10] •अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए ॥

३२. तए णं से सागरदत्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते[11]० ॥

३३. [12]•तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता ॥०

---

१. सं० पा०—बहूहिं जाव ण्हाया।
२,३. पू०—वि० १।७।२१।
४. वि० १।७।२१।
५. सं० पा०—मित्त जाव महिलाओ।
६. सं० पा०—मित्त०।
७. पू०—वि० १।२।३०; पसत्थदोहला ५ (क, ख, ग, घ)।
८. स० पा०—मासाणं जाव पयाया।
९. वि० १।३।३१,३२।
१०. सं० पा०—जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा।
११. पू०—वि० १।२।५३,५४।
१२. सं० पा०—गंगदत्ता वि।

३४. [1]•तए णं ते नगरगुत्तिया गंगदत्तं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उंबरदत्तं दारगं साओ गिहाओ निच्छुभेंति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति ॥

३५. तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे कासे जाव[2] कोढे][3] ॥

३६. तए णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे 'कच्छुल्ले जाव[4] देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ'[5] ॥

३७. एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारए पुरा पोराणाणं[6] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

उंबरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३८. 'उंबरदत्ते णं भंते ! दारए'[7] कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[8] । संसारो तहेव[9] ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ । 'से णं गोट्ठिल्लएहिं वहिए'[10] तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३९. [11]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[12] संपत्तेणं दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि° ॥

---

१. सं० पा०—उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए ।
२. वि० १।१।५२ ।
३. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
४. वि० १।७।७ ।
५. सडियहत्थं जाव विहरइ (क, ख, ग, घ) ।
६. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।
७. तए णं उंबरदत्ते दारए (क, ख); से णं उंबरदत्ते दारए (ग); तए णं से उंबरदत्ते दारए (घ); प्राक्तनाध्ययनक्रमेणायं पाठो गृहीतः ।
८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्नप्रसङ्गत्वेन असौ पाठः असङ्गतः प्रतिभाति ।
९. तहेव जाव पुढवी (ख, ग, घ); पू०—वि० १।१।७० ।
१०. जायमत्ते चेव गोट्ठिवहिए (घ) ।
११. सं० पा०—निक्खेवो ।
१२. ना० १।१।७ ।

अट्ठमं अज्झयणं

सोरियदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! [1]•समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी[2]—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं नयरं। सोरियवडेंसगं उज्जाणं। सोरिओ जक्खो। सोरियदत्ते राया ॥

३. तस्स णं सोरियपुरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं एगे मच्छंधपाडए[3] होत्था ॥

४. तत्थ णं समुद्ददत्ते नामं मच्छंधे परिवसइ—अहम्मिए जाव[4] दुप्पडियाणंदे ॥

५. तस्स णं समुद्ददत्तस्स समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा[5] ॥

६. तस्स णं समुद्ददत्तस्स मच्छंधस्स पुत्ते समुद्ददत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[6] ॥

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया ॥

---

१. सं० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ।
२. ना० १।१।७।
३. मच्छंधे पाडए (ख); मच्छबंधपाडए (घ)।
४. वि० १।१।४७।
५. पू०—ओ० सू० १५।
६. पू०—वि० १।२।१०।
७. वि० १।४।११।

सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव[1] सोरियपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं [अडमाणे ?] अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छंधपाडगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं पासइ एगं पुरिसं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं नीलसाडगनियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं उक्कूवमाणं[2] अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले[3] य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं[4] दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे[5] विहरइ—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। पुव्वभवपुच्छा जाव[6] वागरणं ॥

सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग-पदं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं नयरे होत्था। मित्ते राया ॥

१०. तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरीए नामं महाणसिए होत्था—अहम्मिए जाव[7] दुप्पडियाणंदे ॥

११. तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया[8] य दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लिं[9] बहवे सण्हमच्छा य जाव[10] पडागाइपडागे य, अए य जाव[11] महिसे य, तित्तिरे य जाव[12] मयूरे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति, अण्णे य से बहवे तित्तिरा य जाव मयूरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति, अण्णे य बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा ते बहवे तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवंतए[13] चेव 'निप्पक्खेंति, निप्पक्खेत्ता'[13] सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति ॥

---

१. वि० १।२।१२-१४।
२. कूवमाणं (घ)।
३. किमिकवले (ख)।
४. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ।
५. वि० १।२।१५,१६।
६. वि० १।१।४७।
७. सोउरिया (ख)।
८. कल्लंकल्लं (क, ग)।
९. पण्ण० पद १।
१०. वि० १।७।१६।
११. वि० १।७।१६।
१२. जीवियए (ख)।
१३. निप्पेखंति २ (क); निप्पंखेइ २ (घ)।

१२. तए णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर-थलयर-खहयराणं मंसाइं कप्पणी-कप्पियाइं करेइ, तं जहा—सण्हखंडियाणि य 'वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि'[1] य रहस्सखंडियाणि य, हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य धम्मपक्काणि[2] य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि[3] य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य 'उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता'[4] अण्णे य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव[5] मयूररसए य, अण्णं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रण्णो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति। अप्पणा वि णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जलयर-थलयर-खहयरमंसेहिं च रसिएहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

१३. तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं[6] •पावं कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णे ॥

सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१४. तए णं सा समुद्ददत्ता भारिया निंदू यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणि-घायमावज्जंति। जहा गंगदत्ताए चिंता, आपुच्छणा, ओवाइयं[7], दोहलो जाव[8] दारगं पयाया जाव[9] जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइय-लद्धए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं ॥

१५. तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए जाव[10] उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते यावि होत्था ॥

१६. तए णं से समुद्ददत्ते अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

१७. तए णं से सोरियदत्ते दारए बहूहिं मित्त[11]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं संपरिवुडे° रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे समुद्ददत्तस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, अण्णया कयाइ सयमेव मच्छंधमह-त्तरगत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

---

१. दीहभंडियाण वट्टखंडियाण (क)।
२. थेमपक्काणि(क,ख,ह०वृ);थेवपक्काणि (ग); धमपक्काणी(घ,ह०वृ);वेगपक्काणि (मु०वृ)।
३. हराणि (घ)।
४. उवक्खडावेत्ता (क, घ)।
५. वि० १।७।१६।
६. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता।
७. ओवालिय (क)।
८. वि० १।७।१९-२९।
९. वि० १।७।२९।
१०. वि० १।३।३३,३४।
११. सं० पा०—मित्त° ।

१८. तए णं से सोरियदत्ते दारए मच्छंधे जाए अहम्मिए जाव[1] दुप्पडियाणंदे।

१९. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि[2] एगट्ठियाहिं जउणं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता बहूहिं दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहमद्दणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य मच्छंधुलेहि य[3] 'पयंचुलेहि य'[4] 'पंचपुलेहि य जंभाहि य'[5] 'तिसराहि य भिसराहि य'[6] घिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य 'भिल्लिरीहि य गिल्लिरीहि य'[7] झिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य 'वक्कबंधेहि य सुत्तबंधेहि य'[8] बालबंधेहि य बहवे सण्हमच्छे जाव[9] पडागाइपडागे य गेण्हंति एगट्ठियाओ[10] भरेंति, भरेत्ता कूलं गाहेंति, गाहेत्ता मच्छखलए[11] करेंति, करेत्ता आयवंसि दलयंति। अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा आयव-तत्तएहिं मच्छेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। अप्पणा वि णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि य जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ॥

२०. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स[12] अण्णया कयाइ ते मच्छे सोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे यावि होत्था॥

२१. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सोरियपुरे नयरे सिंघाडग[13]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु य महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! सोरियदत्तस्स मच्छकंटए गले लग्गे। तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियदत्तस्स मच्छियस्स

---

१. वि० १।१।४७।
२. कल्लंकल्लं (घ)।
३. × (क, ख, ग)।
४. पयंधुलेहि य (ख); × (ग)।
५. पंचपुलेहि य बम्भारिएहिं य (क); पंचपुलेहि य जम्भाहि य (ख); पंचन्नलेहि य बम्भाहि य (ग); प्रपंचपुलादयः मत्स्यबंधनविशेषाः (मु० वृ); प्रपंचुलादयः° (ह० वृ); बंधुलादयः° (ह० वृ)।
६. तिसिराहि य भिसिराहि य (ग)।
७. × (क, ख, घ)।
८. णक्खबंधेहि य (ग); णक्खबंधेहि य वक्कबंधेहि य बालबंधेहि य (घ)।
९. पण्ण° पद° १।
१०. एगट्ठियं (क, ख, ग)।
११. मच्छक्खलए (क, ख)।
१२. मच्छंधियस्स (क, ख, ग, घ)।
१३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ।।

२२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[1] उग्घोसंति ।।

२३. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं[2] निसामेंति, निसामेत्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छड्डणेहि य ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ।।

२४. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया[4] ।

२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के भुक्खे जाव[5] किमियकवले य वममाणे विहरइ ।।

२६. एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोराणाणं[6] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ।।

सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । संसारो तहेव[7] । हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ[8] । से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ

---

१. वि० १।८।२१ ।

२. उग्घोसणं उग्घोसेज्जतं (ख, घ) ।

३. मच्छंधे (क, ख, ग, घ) ।

४. परिगया (क) ।

५. वि० १।८।८ ।

६. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

७ वि० १।१।७० । तहेव जाव पुढवी (क) ।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्न-प्रसंगत्वेन असौ पाठः असंगप्रति; प्रतिभाति ।

ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२८. [1]*एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॰॥

---

१. सं० पा०—निक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

नवमं अज्झयणं

देवदत्ता

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! [1]•समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए[3] नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे। पुढवीवडेंसए उज्जाणे। धरणो जक्खो। वेसमणदत्ते[4] राया। सिरी देवी। पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥

३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे। कण्हसिरी भारिया ॥

४. तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा[5] ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ॥

देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी छट्ठ-क्खमणपारणगंसि तहेव जाव[7] रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ। तेसिं

---

१. सं० पा०—उक्खेवओ नवमस्स।

२. ना० १।१।७।

३. रोहीतके (क, ग) सर्वत्र।

४. वेसमणदत्तो (ख, घ)।

५. सर्वासु प्रतिषु 'अहीण जाव उक्किट्ठसरीरा' इति पाठोस्ति। वि० १।४।१० तथा १।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोर्मिश्रणं संभाव्यते। अस्माभिरत्र एको गृहीतः।

६. वि० १।४।११।

७. वि० १।२।१३,१४।

पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं इत्थियं—अवओडयबंधणं उक्खित्त[1]-•कण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं° सूले भिज्जमाणं पासइ, पासित्ता भगवओ गोयमस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, तहेव निग्गए जाव[2] एवं वयासी—एस णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि[3] ?

देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पदं

७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । महासेणे[4] राया ।।

८. तस्स णं महासेणस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे[5] यावि होत्था ।।

९. तस्स णं महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे जुवराया ।।

१०. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ पंच पासायवडेंसयसयाइं करेंति—अब्भुग्गयमूसियाइं[6] ।।

११. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ सामापामोक्खाणं[7] पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एग दिवसे पाणिं गिण्हावेंसु । पंचसओ[8] दाओ ।।

१२. तए णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खेहिं पंचहिं देवीसएहिं सद्धिं उप्पिं पासायवरगए जाव[9] विहरइ ।।

१३. तए णं से महासेणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं । राया जाए[10] ।।

१४. तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ।।

१५. तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समणयाए[11]—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे

---

१. सं० पा०—उक्खित्त जाव सूले ।
२. वि० १।२।१५ ।
३. पू०—वि० १।२।१६ ।
४. महसेणे (क) ।
५. ओरोधे (क) ।
६. पू०—ना० १।१।८९ ।
७. सम्मा° (क) सर्वत्र ।
८. पंचसयओ (वृ) ।
९. ना० १।१।९३ ।
१०. जाए महया (घ) ।
११. समणयाए (ख); समाणाइं (घ) ।

गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ। तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गियओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि[1] य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥

१६. तए णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा सवणयाए[2]—"एवं खलु ममं [एगूणगाणं ?] पंचण्हं सवत्तीसयाणं [एगूणाइं ?] पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव[3] पडिजागरमाणीओ विहरंति" तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय[4]•मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियाइ ॥

१७. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देविं ओहय[5]•मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं झियायमाणिं° पासइ, पासित्ता एवं वयासी किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय[6]•मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियासि ?

१८. तए णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणियं[7] सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंच सवत्तीसयाणं एगूणाइं पंच माइंसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए[8] अण्णमण्णं सद्दावेत्ता[9] एवं वयासी—"एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ जाव[10] अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति।" तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्टु भीया जाव[11] झियामि ॥

---

१. विरहाणि (क, ग, घ)।
२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); अत्र श्रवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य। तेन 'एवं वयासी' इति पाठः प्रकृतो नास्ति, सम्भवतो लिपिदोषेण जातः।
३. वि० १।९।१५।
४. सं० पा०—ओहय जाव झियाइ।
५. सं० पा०—ओहय जाव पासइ।
६. सं० पा०—ओहय जाव झियासि।
७. उप्फेणाउप्फेणियं (क)।
८. समाणाइं (ख, ग); समाणाइं सवणयाए (घ)।
९. सद्दावेंति २ (क, ख, ग, घ)।
१०. वि० १।९।१५।
११. वि० १।९।१६।

१९. तए णं से सीहसेणे राया सामं देविं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव[1] झियाहि। अहं णं 'तह धत्तिहामि'[2] जहा णं तव नत्थि कत्तो वि[3] सरीरस्स आबाहे वा पबाहे वा भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स बहिया एगं महं कूडागारसालं[4]—अणेगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेह 'ममं एयमाणत्तियं'[5] पच्चप्पिणह ॥

२०. तए णं से कोडुंबियपुरिसा करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं ° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सुपइट्ठनयरस्स[7] बहिया पच्चत्थिमे दिसीभाए एगं महं कूडागारसालं[8]—अणगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेंति, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

२१. तए णं से सीहसेणे राया अण्णया कयाइ एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं आमंतेइ ॥

२२. तए णं तासिं एगूणगाणं पंच देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आमंतियाइं समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवेंति[9] ॥

२३. तए णं से सीहसेणे राया एगूणपंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाणं पंचण्हं माइसयाणं कूडागारसालं आवासं[10] दलयइ ॥

२४. तए णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च कूडागारसालं साहरह ॥

२५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव[11] साहरंति ॥

---

१. वि० १।९।१६।
२. तह धत्तीहामि (क); तहा पत्तिहामि (ग); तहा वत्तीहामि (घ); तहा जत्तिहामि (क्व); °जत्तीहामि (ह० वृ) °यत्तीहामि (ह० वृ)।
३. इ (,ख ग)।
४. °सालं करेह (क, ख, ग, घ)।
५. एयमट्ठं (क, ख, ग)।
६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति।
७. सुपइट्ठिय° (क, ख, ग, घ)।
८. °सालं जाव करेंति (क, ख, ग, घ)।
९. उवणेंति (क); उवागच्छंति (घ)।
१०. आवसहं (क, ख); आवहं (ग)।
११. वि० १।९।२४।

२६. तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइं पंच माइसयाइं'[1] सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणाइं वीसाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुंजेमाणाइं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं - उवगीयमाणाइं विहरंति ॥

२७. तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥

२८. तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं ॥

२९. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं[2] •पावं कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

देवत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

३०. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए[3] नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णे ॥

३१. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं[4] •बहुपडिपुण्णाणं° दारियं पयाया—सूमालं सुरूवं ॥

३२. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहियाए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता जाव[5] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेंति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं ॥

३३. तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव[6] परिवड्ढइ ॥

३४. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा[7] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य° अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

---

१. पंच माइसयाइं जाव (क, ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता।
३. रोहीतए (क, ख, ग)।
४. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं।
५. वि० १।३।३२।
६. वि० १।२।४९।
७. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव।

३५. तए णं सा देवदत्ता दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव[1] विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव[2] परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि[3] कणगतिंदूसएणं कीलमाणी विहरइ ॥

३६. इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव[4] विभूसिए आसं 'दुरुहति, दुरुहित्ता'[5] बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहणियाए[6] निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥

३७. तए णं से वेसमणे राया[7] •दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं° वीईवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए 'रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य'[8] जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? किं च[9] नामधेज्जेणं ?

३८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणरायं करयल[10] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं[11] दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ॥

३९. तए णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूयं कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह, जइ वि य सा सयरज्जसुंका[12] ॥

४०. तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[13] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[14] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया संपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागया ॥

४१. तए ण से दत्ते सत्थवाहे ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गए[15] आसणेणं

---

१. वि० १।२।६४ ।
२. ओ० सू० ७० ।
३. °तलंसि (क) ।
४. वि० १।२।६४ ।
५. द्रुहति (क) ।
६. आसवाहिणियाए (ग) ।
७. स० पा०—राया जाव वीईवयमाणे ।
८. रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य (ग, घ) ।
९. वा (घ) ।
१०. सं० पा०—करयल° ।
११. नामेणं (क) ।
१२. सयं० (ख, घ) ।
१३. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।
१४. ओ० सू० २०; पू०—ना० १।१६।१३४ ।
१५. अब्भुग्गए (ख, ग) ।

उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—सदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?

४२. तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेमो। तं जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा, सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता दारिया पूसनंदिस्स जुवरण्णो। भण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंकं[1] ?

४३. तए णं से दत्ते ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एवं चेव णं देवाणुप्पिया ! ममं सुंकं जं णं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

४४. तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, वेसमणस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेंति ॥

४५. तए णं से दत्ते गाहावई अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, ण्हाए[2] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सुहासणवरगएणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाण परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं 'विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं'[3] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव[4] सव्वालंकारविभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं[5] सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त[6]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं° सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[7] दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे, जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु वेसमणं रायं जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रण्णो देवदत्तं दारियं उवणेइ ॥

---

१. सुक्कं (ख, ग, घ)।
२. स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।
३. विउलगंधपुप्फ जाव अलंकारेणं (क,ख,ग,घ)।
४. वि० १।२।६४।
५. °वाहिणी (ख, ग)।
६. सं० पा०—मित्त जाव सद्धिं।
७. ओ० सू० ६७।
८. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ।

४६. तए णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ जाव[1] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पूसनंदि कुमारं देवदत्तं च[2] दारियं पट्टयं दुरुहेइ[3], दुरुहेत्ता सेयापीएहिं[4] कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वरनेवत्थाइं करेइ, करेत्ता अग्गिहोमं करेइ[5], करेत्ता पूसनंदिं कुमारं देवदत्ताए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ।।

४७. तए णं से वेसमणदत्ते राया पूसनंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्विड्ढीए जाव[6] दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेइ[7], कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त[8]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि०-परियणं च विउलेणं[9] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

४८. तए णं से पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए भारियाए[10] सद्धिं उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धनाडएहिं उवगिज्जमाणे[11]-•उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे० विहरइ ।।

४९. तए णं से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं जाव[12] राया जाए पूसनंदी ।।

५०. तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लिं जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेइ, करेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगावेइ, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए[13] रोमसुहाए—चउव्विहाए संवाहणाए संवाहावेइ, संवाहावेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं[14] उव्वट्टावेइ[15], उव्वट्टावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेइ,

---

१. वि० १।९।४५ ।
२. × (क, घ) ।
३. दूहेति (क); दुहति (ख); दुरहेति (ग); दुरूहेत्ति (घ) ।
४. सेयापीतएहिं (क) ।
५. कारेइ (क) ।
६. ओ० सू० ६७ ।
७. करेइ (क, ख, ग, घ) ।
८. सं० पा०—मित्त जाव परियणं ।
९. विउलं (क, ख, ग, घ) ।
१०. दारियाए (क, ख) ।
११. सं० पा०—उवगिज्जमाणे जाव विहरइ ।
१२. वि० १।५।२२-२४ ।
१३. चम्मसुहाए (ख) ।
१४. गंधदूएणं (क); गंधवट्टएणं (ख, ग, वृ); ठाणेपि ३।८७ सूत्रे 'गंधट्टएणं' इति पाठोस्ति ।
१५. उव्वट्टेइ (ग) ।

[तं जहा—उसिणोदएणं 'सीओदएणं गंधोदएणं'[1]] विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ, भोयावेत्ता सिरीए देवीए ण्हायाए[2] •कयबलिकम्माए कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तओ पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

५१. तए णं तीसे देवदत्ताए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव[3] विहरइ। तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं सिरिदेविं[4] अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा[5] जीवियाओ ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी[6] विहरइ ॥

५२. तए णं सा सिरी देवी अण्णया कयाइ मज्जाइया[7] विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था ॥

५३. इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिं देविं मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं[8] समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं[9] संडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवइ[10] ॥

५४. तए णं सा सिरी देवी महया-महया सद्दं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता ॥

५५. तए णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं तओ अवक्कममाणिं पासंति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरिं देविं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा ! अहो ! अकज्ज-

---

१. गंधोदएणं सीओदएण (क, ग); कोष्ठकवर्त्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. सं० पा०—ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए।
३. वि० १।९।५०।
४. सिरिदेवी (क, ख, ग, घ)।
५. वा मंतपओगेण वा (घ)।
६. पडिजागरमाणा (क, ग)।
७. मज्जातीता (क); मज्जावीता (घ)।
८. तए णं तं (क, ख)।
९. पुप्फकिंसुय° (ग)।
१०. पक्खिवेइ (ख, ग)।

मिति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पूसनंदिं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सिरी देवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया ।।

५६. तए णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया माइसोएणं अप्फुण्णे[1] समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए ।।

५७. तए णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे बहूहिं राईसर[2]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहेहिं मित्त[3]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि°-परियणेण य सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्ढीए नीहरणं करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एएणं[4] विहाणेणं वज्झं आणवेइ ।।

५८. तं एवं खलु गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरा पोराणाणं[5] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं

५९. देवदत्ता णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[6]। संसारो [तहेव जाव[7] ?] वणस्सई ।

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नयरे हंसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गंगपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

निक्खेव-पदं

६०. [8]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।°

---

१. अप्पुण्णे णं (क) ।
२. स० पा०—राईसर जाव सत्थवाहेहिं ।
३. सं० पा०—मित्त जाव परियणेण ।
४. ततेणं (ख, घ); तेणं (क्व) ।
५. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहर ।
६. उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।
७. वि० १।१।७० ।
८. सं० पा०—निक्खेवो ।
९. ना० १।१।७ ।

दसमं अज्झयणं

अंजू

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते[1] ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्ढमाणपुरे नामं नयरे होत्था। विजयवड्ढमाणे उज्जाणे। माणिभद्दे जक्खे। विजयमित्ते राया॥

३. तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे। पियंगू नामं भारिया। अंज दारिया जाव[3] उक्किट्ठसरीरा। समोसरणं परिसा जाव[4] गया॥

अंजूए पुव्वभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[5] अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं[6] कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं[7] कूवमाणिं पासइ, पासित्ता चिंता तहेव जाव[8] एवं वयासी—सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि[9] ? वागरणं॥

---

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ।
२. ना० १।१।७।
३. वि० १।४।३६।
४. वि० १।४।११।
५. वि० १।२।१२-१४।
६. °नियच्छं (ख)।
७. विस्सराइं (ख, घ); विसराइं (ग);
८. वि० १।२।१५।
९. पू०—वि० १।२।१६।

अंजूए पुढविसिरीभव-वण्णग-पदं

५. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नामं नयरे होत्था ।।

६. तत्थ णं इंददत्ते राया । पुढविसिरी[1] नामं गणिया होत्था—वण्णओ[2] ।।

७. तए णं सा पुढविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे बहवे राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°प्पभियओ बहूहिं[4] •य विज्जापओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णप्पओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहिं° आभिओगित्ता[5] उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।।

८. तए णं सा पुढविसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं[6] •पावं कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवम-ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।।

अंजूए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

९. सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वड्ढमाणपुरे नयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णा ।।

१०. तए णं सा पियंगुभारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया । नामं अंजू[7] । सेसं जहा देवदत्ताए[8] ।।

११. तए णं से विजए राया आसवाहणियाए निज्जायमाणे जहा वेसमणदत्ते[9] तहा अंजुं पासइ, नवरं—अप्पणो अट्ठाए वरेइ जहा तेयली जाव[10] अंजूए भारियाए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए जाव[11] विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

१२. तए णं तीसे अंजूए देवीए अण्णया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था ।।

१३. तए णं से विजए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह

---

१. पुहवि° (क, ग) ।
२. वि० १।२।७ ।
३. सं० पा०—राईसर जाव प्पभियओ ।
४. सं० पा० – बहूहिं चुण्णप्पओगेहिं जाव आभिओगित्ता । द्रष्टव्यम्—वि० १।२।७२ ।
५. अहिओगेत्ता (ग) ।
६. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता ।
७. अंजूसिरी (घ) ।
८. वि० १।९।३२-३५ ।
९. वि० १।९।३६-४६ ।
१०. ना० १।१४।१९, २० ।
११. वि० १।९।४८ ।

णं तुमं देवाणुप्पिया ! वड्ढमाणपुरे नयरे सिंघाडग[1]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा° एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विजयस्स रण्णो अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए । तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओवा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा[2] •अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए तस्स णं वेसमणदत्ते राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ।।

१४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा° जाव[3] उग्घोसेंति ।।

१५. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पत्तियाहिं[4] वेणइयाहिं कम्मियाहिं पारिणामियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए ।।

१६. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

१७. तए णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं विलवइ ।।

१८. एवं खलु गोयमा ! अंजू देवी पुरा पोराणाणं[5] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

अंजूए आगामिभव-वण्णग-पदं

१९. अंजू णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[6] । एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव[7] वणस्सई ।

सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ ।

---

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव एवं ।

२. सं० पा०—तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति ।

३. वि० १।१०।१३ ।

४. अंजुए देवीए बहवे उप्पत्तियाहिं (क,ख,ग,घ) ।

५. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

६. उववण्णा (क, ख, ग, घ) ।

७. वि० १।१।७० ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सव्वओभद्दे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए[1] पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वइस्सइ । केवलं बोहिं बुज्झिहिइ । पव्वज्जा । सोहम्मे ।

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा पढमे जाव[2] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'[4] !

—त्ति बेमि ॥

---

१. पुमत्ताए (क) ।

२. वि० १।१।७० ।

३. ना० १।१।७ ।

४. सेणं भंते (ख); सेयं भंते (ग) ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

सुबाहू

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए। सुहम्मे समोसढे। जंबू जाव[1] पज्जुवासमाणे[2] एवं वयासी—जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

सुबाहू भद्दनंदी य, सुजाए य सुवासवे।
तहेव जिणदासे य, धणवई य महब्बले॥
भद्दनंदी महच्चंदे, वरदत्ते 'तहेव य'[5]॥ १॥

३. जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

---

१. वि० १।१।३,४।
२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ)।
३. ना० १।१।७।
४. ना० १।१।७।
५. × (क, ख, ग, घ); मुद्रितप्रत्यनुसार गृहीतोयं पाठः।
६. ना० १।१।७।

सुबाहुकुमार-पदं

४. तए णं से सुहम्मे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।।

५. तस्स[1] णं हत्थिसीसस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था —सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे ।।

६. तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स[2] जक्खाययणे होत्था —दिव्वे ।।

७. तत्थ णं हत्थिसीसे[3] नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ।।

८. तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ।।

९. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि[4] सीहं सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मणं तहा[5] भाणियव्वं ।।

१०. •[6]तए णं से सुबाहुकुमारे बावत्तरिकलापंडिए जाव[7] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

११. तए णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं जाव[8] ° अलंभोग-समत्थं वा[9] जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडेंसगसयाइं कारेंति[10]—अब्भुग्गयमूसियपहसियाइं[11] । एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महब्बलस्स रण्णो, नवरं—पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं[12] एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति[13] । तहेव पंचसइओ दाओ जाव[14] उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं[15] •मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ।।

---

१. तत्थ (क) ।
२. जहस्स (क) ।
३. °सीसए (क, घ) ।
४. वासघरंसि (क्व) ।
५. ना० १।१।१८-३२, ७२-८७; नवर अकाल-मेघदोहदवक्तव्यता नास्ति (वृ) ।
६. सं० पा०—सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगस-मत्थं ।
७. ओ० सू० १४८ ।
८. ओ० सू० १४९ ।
९. वा वि (क, ख, ग) ।
१०. करेंति (क, ख); करेति (ग); करावेंति (घ) ।
११. पू०—ना० १।१।८९ ।
१२. °कन्नासयाणं (घ) ।
१३. गिण्हावेंसु (क, ग) ।
१४. भ० ११।१५८-१६१ ।
१५. सं० पा०—फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ ।

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे[1]। परिसा निग्गया। अदीणसत्तू जहा कूणिए[2] तहा निग्गए। सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव[3] धम्मो कहिओ। राया परिसा गया॥

१३. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ जाव[4] एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं[5]। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर[6]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति[7] नो खलु अहं तहा संचाएमि पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह॥

१४. तए णं से सुबाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए॥

सुबाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव[8] एवं वयासी—अहो णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे।

बहुजणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे।

साहुजणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे[9] •कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे[10] सुरूवे।

सुबाहुणा भंते! कुमारेणं इमा[11] एयारूवा उराला माणुसिड्ढी[10] किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता? किण्णा अभिसमण्णागया? के वा एस आसि पुव्वभवे[11]? •कि

---

१. समोसरणं (क, ख, ग, घ)।
२. ओ० सू० ५५-६९।
३. भ० ९।१५८-१६३।
४. ना० १।१।१०१।
५. पू०—राय० सू० ६९५।
६. सं० पा०—राईसर जाव नो खलु अहं।
७. वि० १।१।२४,२५।
८. सं० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे।
९. इमे (क, ख)।
१०. माणुस्सिड्ढी (ख); माणुस्सरिद्धी (घ)।
११. सं० पा०—पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया।

नामए वा किं वा गोएणं ? कयरंसि वा गामंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता° अभिसमण्णागया ?

सुबाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं

१६. 'गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी'[1]—

१७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥

१८. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपण्णा जाव[2] पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति[3], उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे ओराले[4] •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे[5] विहरइ ॥

२१. तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव 'धम्मघोसे थेरे'[6] आपुच्छइ जाव[7] अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहे अणुप्पविट्ठे ॥

२२. तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गच्छइ[8], पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता 'जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं[9] विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे ॥

---

१. × (क, ख, ग)।

२. ना० १।१।४।

३. उवागया (ग)।

४. सं० पा०—उराले जाव लेस्से।

५. खवमाणे (क)।

६. सुहम्मे थेरे (क); सुदत्ते थेरे धम्मघोसे (ख); 'सुहम्मे थेरे' त्ति धर्मघोषस्थविरा-नित्यर्थः, धर्मशब्दसाम्याच्छब्दद्वयस्याप्येकार्थत्वात् (वृ)।

७. वि० १।२।१३,१४।

८. अणुगच्छइ (घ)।

९. × (क, ख, ग)।

२३. तए णं तस्स सुमुहस्स[1] गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं 'गाहगसुद्धेणं दायगसुद्धेणं'[2] तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए[3], मणुस्साउए निबद्धे, गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, [तं जहा—वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते[4], चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासंसि 'अहो दाणे अहो दाणे' घुट्ठे य[5]।] हत्थिणाउरे सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई[7] •पुण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे ण सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया° ॥

तं धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

२४. तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२५. तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव[8] उप्पिं पासाए विहरइ। तं एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

२६. पभू णं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?

हंता पभू ॥

२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२८. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१. 'तस्स सुमुहस्स' त्ति विभक्तिपरिणामात् 'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (वृ)।

२. दायगसुद्धेणं पडिगासुद्धेणं (घ)।

३. परित्तकए (घ)।

४. निवाडिए (क्व)।

५. अहोदाणं २ (घ)।

६. कोष्ठकवर्त्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

७. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

८. सं० पा०—गाहावई जाव तं धण्णे।

९. वि० २।१।९-११।

२९. तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

३०. तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ[2], पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥

सुबाहुकुमारस्स पवज्जा-पदं

३१. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[3] धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा णं ते गामागर[4]-•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा[5] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयंति।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं[6] •सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं° गिहिधम्मं पडिवज्जंति।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति।

तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा[7] •इह समोसरेज्जा इहेव हत्थीसीसस्स नयरस्स बहिया पुप्फकरंडयउज्जाणे कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरेज्जा, तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता[8] •अगाराओ अणगारियं° पव्वएज्जा ॥

३२. तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं

---

१. ओ० सू० १६२।
२. पडिगिण्हइ (क)।
३. °वरत्तकाले (क, ख)।
४. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसा।
५. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयंति।
६. सं० पा०—पंचाणुव्वइय जाव गिहिधम्मं।
७. सं० पा० - इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा।
८. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

अज्झत्थियं जाव[1] वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं[2] •चरमाणे गामाणुगामं° दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव पुप्फकरंडयउज्जाणे जेणेव कयवण-मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा राया निग्गए ॥

३३. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया[3] •जणसद्दं वा जाव[4] जणसण्णिवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं जहा जमाली तहा° निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिगया ॥

३४. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव[5] अणगारे जाए इरियासमिए[6] जाव[7] गुत्तबंभयारी ॥

सुबाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमतवोवहाणेहिं अप्पाणं[8] भावेत्ता, बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥

३६. से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता[9] •अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सइ।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ। आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ[10]।

से णं ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, बंभलोए। माणुस्सं, महासुक्के। माणुस्सं, आणए। माणुस्सं, आरणे। माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं

---

१. वि० २।१।३१।
२. सं० पा०—पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे।
३. सं० पा०—तं महया जहा पढमं तहा।
४. भ० ६।१५८।
५. ना० १।१।१०१-१५१।
६. रियासमिए (क)।
७. वि० १।१।७०।
८. अत्ताणं (ख)।
९. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ।
१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ)।

जहा दढपइण्णे[1] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. पू०—ओ० सू० १४१-१५४ ।

२. ना० १।१।७ ।

बीयं अज्झयणं

भद्दनंदी

१. वितियस्स उक्खेवओ।

एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे नयरे। थूभकरंडग उज्जाणं। धण्णो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी।

सुमिणदंसणं कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य।
जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥

जहा सुबाहुस्स, नवरं—भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खा णं पंचसया। सामीसमोसरणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा। महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी[1] नयरी। विजए कुमारे। जुगबाहू तित्थयरे[2] पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इह उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव[3] महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

निक्खेवओ॥

तच्चं अज्झयणं

सुजाए

१. तच्चस्स उक्खेवओ।

वीरपुरं नयरं। मणोरमं उज्जाणं। वीरकण्हमित्ते[4] राया। सिरी देवी। सुजाए कुमारे। बलसिरीपामोक्खा पंचसया। सामीसमोसरणं। पुव्वभवपुच्छा। उसुयारे नयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पण्णे जाव[5] महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

निक्खेवओ॥

---

१. पुंडरिगिणी (क); पुंडरगिणी (घ)।
२. तित्थंकरे (ख)।
३. वि० २।१।९-३६।
४. वीरकिण्ह° (क)।
५. वि० २।१।९-३६।

चउत्थं अज्झयणं

सुवासवे

१. चउत्थस्स उक्खेवओ।

विजयपुरं नयरं। नंदणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हा देवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवे। कोसंबी नयरी। धणपाले राया। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इह जाव[1] सिद्धे॥

पंचमं अज्झयणं

जिणदासे

१. पंचमस्स उक्खेवओ।

सोगंधिया नयरी। नीलासोगं उज्जाणं। सुकालो[2] जक्खो। अप्पडिहओ राया। सुकण्णा देवी। महचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं। जिणदासो पुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहे राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव[3] सिद्धे॥

छट्ठं अज्झयणं

धणवई

१. छट्ठस्स उक्खेवओ।

कणगपुरं नयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया। तित्थयरागमणं। धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो। मणिवइया[4] नयरी। मित्तो राया। संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव[5] सिद्धे॥

---

१. वि० २।१।९-३६।
२. सुकोसलो (ग)।
३. वि० २।१।९-३६।
४. मणिवया (घ)।
५. वि० २।१।९-३६।

सत्तमं अज्झयणं

महब्बले

१. सत्तमस्स उक्खेवओ।

महापुरं नयरं। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवईपामोक्खा पंचसया। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुरं नयरं। नागदत्ते गाहावई। इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव[1] सिद्धे॥

अट्ठमं अज्झयणं

भद्दनंदी

१. अट्ठमस्स उक्खेवओ।

सुघोसं नयरं। देवरमणं उज्जाणं। वीरसेणो[2] जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे। महाघोसे नयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव[3] सिद्धे॥

नवमं अज्झयणं

महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ।

चंपा नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दे जक्खे। दत्ते राया। रत्तवती देवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवो। तिगिंछी नयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव[4] सिद्धे॥

---

१. वि० २।१।९-३३।
२. वेरसेणो (क)।
३. वि० २।१।९-३६।
४. वि० २।१।९-३६।

दसमं अज्झयणं

वरदत्ते

१. दसमस्स उक्खेवओ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था। उत्तरकुरुउज्जाणे। पासामिओ जक्खो। मित्तनंदी राया। सिरिकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वरसेणापामोक्खा पंच देवीसया। तित्थयरागमणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा। सयदुवारे नयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पाडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स। चिंता जाव पव्वज्जा। कप्पंतरिते जाव[1] सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव[2] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ॥

२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

सेवं भंते! सेवं भंते!

परिसेसो

विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो सुहविवागो य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एवं सुहविवागे वि। सेसं जहा आयारस्स॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ५६७१८,

अनुष्टुप्-श्लोक १७७२ अक्षर १४,

---

१. वि० २।१।९-३६।

२. ओ० सू० १४१-१५४।

३. ना० १।१।७।

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१९।४१	१।१९।२८
अगडे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेणं जाव आसणेणं	१।१६।१९७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।९।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव सावियां जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।९८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७९	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३,५६,१५४,१५५,१६९,२०४,२०५; १।२।१२,७१;१।५।११८,१२४;१।७।२५; १।१६।११८,२८५;२।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणि	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्ठमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि	२।८।१,२	२।२।१,२
अट्ठाइं जाव नो वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाइं जाव वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अड्ढा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अड्ढा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

अणंते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियव्वो	१।१।१९४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।९७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ		
पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ		
जाव पव्वइस्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्णं च तं विउलं	१।८।२०७	१।८।२०५
अण्णमण्णं जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्थामा जाव अधारणिज्ज°	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निंबोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३९	१।१।१०४
अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए	१।५।११८;१।१९।२८	१।५।१२४
अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिसिंचइ जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।९३-९५	१।१।११७-११९
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०९	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग संज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अवंगुणेइ जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

अवरकंका जाव सण्णिवाडिया	१।१६।२७९	१।१६।२६२
अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं	१।५।९९-१०१	१।५।३४-३८
अवहरइ जाव तालेइ	१।१८।१२	१।१८।८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	१।१६।२२०	१।१६।२१६
अवीरिए जाव अधारणिज्ज°	१।८।१६६	१।१६।२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	१।१६।२४६	१।१६।२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	१।८।१७२	१।८।१५९
असणं जाव अणुबड्ढेमि	१।२।१२	१।२।१२
असणं जाव दवावेमाणी	१।१४।३९	१।१४।३८
असणं जाव परिभुंजेमाणी	१।२।२०	१।२।१४
असणं जाव परिवेसेइ	१।२।५२,५३	१।२।३७,३८
असणं जाव विहरइ	१।१२।४	१।२।१४
असणं मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता	१।७।२२	१।७।६
असण जाव पसन्नं	१।१६।१५२	१।१६।१५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव	१।१६।५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कंडरीयं	१।१९।३४	१।१९।३३
अहं जाव अणेगभूयभावभविए	१।५।७६	१।५।७६
अहं जाव सुया	१।५।७६	१।५।७६
अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्ध पीढ० विहरामि	१।५।१२४	१।५।११७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१।१८।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१।१८।१९	१।१८।१९
अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता	१।१।२०१	१।१।१९८
अहापडिरूवं जाव विहरइ (ति)	१।१।९७;१।१६।११	१।१।४
अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण	१।५।११६	१।५।११५
अहासुत्तं जाव सम्मं	१।१।२०१	१।१।१९८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए	१।८।४२	वृत्ति
अहीण जाव सुरूवे	१।१।१६	ओ० सू० १५
अहो णं तं चेव	१।१२।१६	१।१२।१३
आइगरे जाव विहरइ	२।१।२०	१।१।९५
आइण्ण वेढो	१।१७।१४	वृत्ति

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	१।१६।१८८	१।१६।१८९
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७;१।१९।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	१।१६।१९०	१।१६।१८९
आढाइ जाव भोगं	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१।१९।३०	१।८।१७०
आढायंति °	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायंति जाव संलवेंति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पव्वयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पव्वयामि	१।१९।१२	१।१।१०१
आरोग्गतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२९	१।१।२०
आलंबे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्टंति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१९।४२	१।९।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्जं जाव सव्विंदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय०	१।१२।१९	१।१२।४
आसिय जाव गंधवट्टिभूयं	१।५।९७	१।१।३३
आसिय जाव परिगीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५।८।१५९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	१।१६।२८९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पव्वयामो	१।८।१३	१।५।९०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

आहेवच्चं जाव विहरइ	१।३।८	१।१।११८
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१८।२०	१।५।६
आहेवच्चं जाव विहरसि	१।१।१५७	१।५।६
इट्ठा जाव मणामा	१।१६।७०	१।१।४६
इट्ठा तं चेव	१।१६।४८	१।१६।४७
इट्ठाहिं जाव आसासेइ	१।१६।१३१	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव एवं	१।८।२०३	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।८।६७	१।१।४८
इट्ठाहिं जाव समासासेइ	१।१।५०	१।१।४६
इट्ठे जाव से णं	१।५।२०	१।१।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	१।८।७९;१।१६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।७।६;२।१।१२	१।१।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ	१।१४।४०	१।१।१९४
इहमागए जाव विहरइ	१।५।५३	१।१।९७;१।५।५२
ईसर जाव नीहरणं	१।१४।५६	१।५।६;१।२।३४
ईसर जाव पभितीणं	१।७।६	१।५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्तं	१।१।८९;१।८।४९	१।१।२५
उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।४०	१।८।६७
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	१।१६।२०४,२०६	राय० सू० १०
उक्किट्ठाए जाए विज्जाहरगईए	१।१६।१९०	१।४।२१
उक्किट्ठाए प्फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलंजाव दुरहियासं	१।१।१६३	१।१।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कंतीए	१।१।१८७	१।१।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	१।५।१०६;१।१६।२०;१।१९।४५	१।१।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१।१६।३२१	१।१६।३१९
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ	१।५।८०	भ० २।५२;१।५।५२
उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो	१।८।१७९	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	१।२।१४	राय० सू० ९७
उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।१२८	१।१६।३७
उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण	१।८।३८;१।१६।३७	वि० १।४।३६

उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि ध मं जाव सुमिणस्स	१।१।१९	१।१।१९
उरालाइं जाव भुंजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाइं जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फासेणं	१।१२।४	१।१२।३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्टियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वेत्तेंति जाव दंतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए	१।४।१९	१।४।११
उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसिं जाव वाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्दं	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणिं जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८;१।१६।१३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं पेसेहिं परियणेणं	१।१४।७७	१।१४।७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा । नवरं इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य । इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलबहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य।		
धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एवं जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स	१।१८।३१,३२	१।१८।२०,२२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे		
तहेव जाव सूमालिया	१।१६।९४-९७	१।१४।४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२।३।११	ठाणं २।३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि		
कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं	१।१४।२१	१।१४।२१

एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते	१।५।११७	१।५।११७
एवं मासा वि । नवरं इमं नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस तं जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेणं अभक्खेया । धन्नमासा तहेव	१।५।७५	१।५।७३; भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोचुल्लए साडोल्लए	१।१८।८	१।१८।८
एवं सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	१।१६।२२५	१।१६।१९५
ओसन्ने जाव संथारए	१।५।१२५	१।५।११७
ओहय जाव झियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओहयमण जाव झियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं	१।१४।३८;१।१६।२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ	१।१४।३७;१।१६।६२,८७,२०७	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति	१।९।१५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि	१।१६।६४,९२,२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ	१।८।१६८;१।१४।७७;१।१७।८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे	१।१९।३२	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि	१।१७।९	१।१।३४
कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेयं	१।१९।१२	१।१।१०१
कंता जाव भवेज्जामि	१।१६।९७	१।१४।४३
कंते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।९०
कटटु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१,२५२
कट्ठस्स य जाव भरेंति	१।१७।२८	१।१७।२२

कणग जाव दलयइ	१।१६।१६८	१।१।९१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सावएज्जं	१।१८।३८	१।१।९१
कणग जाव सिलप्पवाले	१।१८।३३	१।१।९१
कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया	१।१।८१	१।२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१।१३।२५	१।१३।२५
कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं	१।१६।७३	१।१।८१
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१।१।२७	१।१।३३
कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१।१।३२	१।२।६६
कयबलिकम्मे जाव रायगिहं	१।२।५८	१।१।८१
कयबलिकम्मे जाव सरीरे	१।१।६६	१।१।२७
कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकार०	१।१।४७	१।१।८१
करयल०	१।५।६८,१२३;१।८।७३,८१,९८, १५८,१६०;१।९।३१;१।१४।३१,५०	१।१।१९
करयल०	१।८।२०३,२०४;१।१६।१३७,१६१, २१६,२६४;१।१७।११	१।१।२६
करयल०	१।१६।२४६	१।१।३९
करयल अंजलिं	१।१।५८,६०	१।१।१९
करयल जाव एवं	१।१।३०;१।१६।१७०,२९२; १।१९।१३,४६;२।१।२०	१।१।२६
करयल जाव एवं	१।९।१७;१।१४।२७,२८;१।१६।४३	१।१।२१
करयल जाव कट्टु	१।१।११८;१।१६।१३३;२।१।११	१।१।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१।१६।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१।१६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१९६	१।८।१९५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१९५	१।१।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१७।२९	१।१।३९
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।८।१३१;१।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चेव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१।१६।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१४।१३	१।५।१३
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	१।१।२१	१।१।१९

करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	१।१।३९	१।१।२६
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	१।८।१२९	१।१।४८
करयल वद्धावेइ	१।५।२०	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।८।१०५	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।१६।१५७	१।१।३९
करेइ जाव अडमाणीओ	१।१४।४१,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरंति	१।९।१५	१।२।१४
करेत्ता जाव विगयसोया	१।१८।२७	१।९।४८
करेमो तं चेव जाव णूमेमो	१।१६।२८८	१।१६।२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२।१।१२	राय० सू० ९
करेह जाव पच्चप्पिणंति	१।८।४०	१।८।५१
कल्लं	१।८।५१	१।१।२४
कल्लं जाव विहरइ	१।५।१२४	१।५।१२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	१।२।३३	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	१।२।६७	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	१।२।४५	१।२।३३
कारणेसु य जाव तहा	१।५।९०	१।१।१६
कालगए जाव प्पहीणे	१।१६।३२२	१।५।८४
कालोभासे जाव वेयणं	१।२।६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	१।१६।३०	१।१३।२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	१।१७।२२	१।१७।२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	१।१३।२०	१।१७।२३
किण्होभासा जाव निउरंबभूया	१।७।१३	ओ० सू० ४
कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	१।८।१७४	१।८।१७३
कुडवा जाव एगदेसंसि	१।७।१७,१८	१।७।१५,१६
के जाव गमणाए	१।१।१११	१।१।१०७
कोट्ठपुडाण य जाव अण्णेसिं	१।१७।२२	वृत्ति
कोट्ठागारंसि सकम्म सं	१।७।२५	१।७।७
कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति	१।८।५२	उवा० १।४७;१।८।५१
कोडुंबियपुरिसा जाव एवं	१।१५।७	१।१५।६
कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव	१।१।११७	१।१।११६
कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	१।१।६२	१।१।२३
खंड जाव एडेह	१।१६।७८	१।१६।७४

खंतीए जाव बंभचेरवासेणं	१।१०।५	१।१०।३
खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं	१।१८।१४	१।१८।१०
खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१।१६।३६	आयारचूला १५।१४
गंध जाव उस्सुक्कं	१।८।८४	१।१।३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।१६९	१।८।१९०
गंध जाव सक्कारेत्ता	१।७।६	१।१।३०
गंधव्वेहि य जाव विहरंति	१।१६।१५२	१।१६।१५०
गज्जियं जाव थणियसद्दे	१।९।९	१।८।७१
गणनायग जाव आमंतेंति	१।१।८१	१।१।२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	१।८।६६	१।८।६६
गब्भस्स जाव विणेंति	१।२।१७	१।२।१७
गय०	१।८।६३	१।१।६७
गवलगुलिय जाव खुरधारेणं	१।९।१६	उवा० २।२२
गवल जाव एडेमि	१।९।३७	१।९।१६
गहाय जाव पडिगए	१।१८।३९	१।१८।३८
गामघातं वा जाव पंथकोट्टिं	१।१८।२४	१।१८।२२
गामागर जाव अणुपविससि	१।१६।२२९	१।८।५८
गामागर जाव आहिंडह	१।१४।४३;१।१७।१७	१।८।५८
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं	१।२।२९	१।२।२७,२९
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	१।८।७९	१।८।७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१।१२।१९	१।१२।१९
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।८।१६	१।१।१९५
चउत्थ जाव विहरइ	१।५।१०१;२।१।३३	१।१।१९५
चउत्थ जाव विहरंति	१।८।१७,२५	१।१।१९५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२।४।१	२।२।१
चंपगपायवे०	१।१८।४९	१।१।१०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१।१।६७	१।१।३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१।१५।७	१।१५।६
चरमाणा जाव जेणेव	१।२।६९	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव	१।५।१०	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ	१।५।१०८	१।१।४
चवलं० नहेहिं	१।४।१७	१।४।१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१।१४।३३,३४	१।१।७६-७९

चारुवेसा जाव पडिरूवा	१।२।८	१।१।१७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७९	१।८।७९
चिट्ठइ जाव उट्ठाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्ठइ जाव संजमेणं	१।१।१९३	१।१।१५१
चित्तेह जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरूवं	१।२।६९	१।१।४
चेइए जाव विहरइ	१।१।९४	१।१।४
चेइए जाव संजमेणं	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडंगे	१।१८।३०	१।१८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१८।२८	१।१८।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१३।३६	१।१३।३६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१६।१०८	१।१६।१०६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए	१।१६।१०७	१।१६।१०६
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	१।१६।१०५	१।१।१९५
जणवयं जाव नित्थाणं	१।१८।३२	१।१८।२२
जहा पोट्ठिला जाव परिभाएमाणी	१।१६।९२	१।१४।३८
जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलिय सरीरे जाए	१।१९।२४-२६	१।५।११४-११६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१७।११	१।८।७२
जहा महब्बले जाव परिवड्ढिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए	१।१७।६	१।९।९
जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१९	औ० सू० १९;वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए	२।१।४०	राय० सू० ७९७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए	१।१९।२०	१।५।१०६
जायं च जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१४।४९	१।५।४७
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे	१।१२।२३	१।१२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासइ	१।५।१७	१।१।९९
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवा-जीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३,६४	राय० सू० ६९३;१।५।४७
जाव हावभावं	१।८।१२१	१।८।११७

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१।१६।२१९	१।२।१४
जोव्वणेण य जाव नो खलु	१।८।१५४	१।८।९०
झोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेंति जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिंभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६;१।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव बहूहिं	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्झयणस्स उक्खेवओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२।३।१२	२।१।६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३,१४४	१।१६।१३४-१४१
तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०७	१।१।१०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१८।५२	१।१८।५१
तं रयणि च णं चोद्दस महासुमिणा वण्णओ	१।८।२९	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११
तच्चं दूयं चंपं नयरिं। तत्थ णं तुम कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमं दूयं हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतरायं करयल जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं		

धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं। तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराटं नयरिं। तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह।	१।१६।१४५	१।१६।१३२-१३४
तच्चं पि जाव संचिट्ठइ	१।१९।३५	१।१९।३५
तच्चा जाव सब्भूया	१।१२।३१	१।१२।१९
तणकूडे०	१।१४।७७	१।१४।७६
तत्थे जाव संजायभए	१।१।१६८	१।१।१६०
तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे	१।८।१८१	१।१।१९०
तलवर जाव पभितओ	१।१४।६५	१।५।६
तलवर जाव सत्थवाह	१।५।६	ओ० सू० ५२
तहत्ति जाव पडिसुणेंति	१।५।१३	१।१।२६
तहारूवेहिं जाव विपुलं	१।१।२१५	१।१।२०६
तहेव जाव पहारेत्थ	१।८।१३६,१३७	१।८।९९,१००
तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं	२।१।५१-५४	२।१।३२-४४
तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइ-छत्तं पडागाइपडाग पासइ २ त्ता		
विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता	१।५।२८,२९	१।१।१२९,१४४,९९
ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं	१।१६।३२६	१।१।२१२
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।१९।३४	१।१९।२९
तिग जाव पहेसु	१।५।२६	१।१।३३
तिग जाव बहुजणस्स	१।१६।२६	१।५।५३
तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे	१।६।४	१।६।४
तुट्ठी वा जाव आणंदो	१।२।६४	१।२।६३
तुब्भण्णं जाव पव्वयामि	१।१२।४३	१।१।१०४
तुरियं जाव वेइय	१।८।१६६	१।४।१४

तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं	१।१६।१५५	१।१।२२
तेसिं जाव बहूणि	१।१७।६	१।८।७१
थलय०	१।८।४९	१।८।३०
थलय जाव दसद्धवण्णं	१।८।३१	१।८।३०
थलय जाव मल्लेणं	१।८।३२	१।८।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	१।५।८०	१।५।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	१।८।८	१।८।१२
थेरा जाव आलित्ते	१।१६।३१५	१।१।१४९
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१८	सूय० २।२।७८
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२४	१।३।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	१।८।१४१ १५२	१।८।१४०
दारियं जाव झियायमाणि	१।१६।६४	१।१६।६२
दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी	१।८।१४७	१।८।१४६
दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं	१।१६।२९९	१।१६।२९७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	१।१।२०	१।१।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	१।२।७६	१।२।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।८।१२९	१।८।११९
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	१।१७।१३	१।१।१०२
दुरुहंति जाव कालं	१।१६।३२३	१।१६।३२३
दुरूढा जाव पाउब्भवंति	१।८।१४	१।५।९१
दूइज्जमाणा जाव जेणेव	१।१६।३२१	१।१।४
दूइज्जमाणे जाव विहरइ	१।१६।३२०	१।१।४;१।१६।३१९
देवकन्ना	१।८।१५४	१।८।८६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।८।८६,१११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।८।१२८	१।८।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	१।१६।२४	१।१।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	१।१६।३२३	१।१६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।८।७९	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	१।१६।२६५	१।५।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए	१।१९।३४	१।१९।२९
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	१।१६।२४२	१।१६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	१।१९।२९	१।१९।२९
देवी जाव पंडुस्स	१।१६।३०१	१।१६।२९२

देवी जाव पउमनाभ०	१।१६।२३९	१।१६।२३३
देवी जाव साहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निग्गंथाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मल्लीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
धण कणग जाव परिभाएउं	१।१।९२	१।१।९१
धण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।९१
धण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।९१
धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
धम्मं सोच्चा जं नवरं	१।५।८७	१।१।१०१
धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं, अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं णो संचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६९५
धम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
धोवसि जाव आसयसि	२।१।३५	२।१।३४
धोवेइ जाव आसयइ	२।१।३८	२।१।३४
धोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११९	१।१६।११४
धोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया	१।८।२२४	जंबू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	१।८।९७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।९९
नट्टा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्ठमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरिं अणुपविसइ	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।९।१,२	२।२।१,२
नवरं तस्स	१।७।२८,२९	१।७।८,२५,२६
नाइ०	१।५।२६;१।७।६,९,२२,२६,४२;१।१५।११;१।१६।५०,५४;१।१८,५१,५६	१।१।८१
नाइ०	१।१४।१८;१।१५।१९	१।५।२०

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१।७।२५	१।७।६
नाइ जाव आमंतेइ	१।१४।५३	१।७।६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१।२।१९	१।२।१२
नाइ जाव परियणं	१।१४।१९	१।१।८१
नाइ जाव परियणेण	१।९।४८	१।१।८१
नाइ जाव परिवुडे	१।१६।५०	१।५।२०
नाइ जाव संपरिवुडे	१।१३।१५;१।१४।५३	१।५।२०
नामं वा जाव परिभोगं	१।१६।९७	१।१४।३६
नाम जाव परिभोगं	१।१४।३७	१।१४।३६
नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं	१।१।१२८	आयारचूला १५।२८
निक्खेवओ	२।४।६	२।१।४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२।२।८	२।१।४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२।४।९	२।१।६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२।१०।७	२।१।६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।३।८	२।१।४५
निक्खेवओ बिइयवग्गस्स	२।२।१०	२।१।६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	१।१६।२३	१।१।२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१।५।१२४	१।५।११४
निग्गंथी वा	१।१८।६१	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१।७।२७;१।१०।३;१।११।३,५	१।२।६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१।२।७६	१।२।६८
निग्गंथो वा	१।१७।२५,३६	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१।१५।१४	१।३।२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१।५।१२९	१।२।७६
निट्ठियं जाव विज्झायं	१।१।१८४	१।१।१८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे	१।१८।५४	१।२।३२
नियग०	१।७।६	१।१।८१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	१।१।१६७	१।१।१५६
निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ	१।१६।३६	राय० सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुण्णाया	१।१४।५०	१।१।१०४
निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि	१।८।८	१।५।८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	१।१६।१९८	१।१६।१८७

निस्संचारं जाव चिट्ठंति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।९।१६
नीलुप्पल जाव असिं	१।१४।७३	१।९।१६
नीलुप्पल जाव खंधंसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पंचअणगारसया बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पंचमवग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव बत्तीसं	२।५।१,२	२।२।१,२
पंचमे जाव भवियव्वं	१।७।३३	१।७।२५,९
पंचयण्णं जाव पूरियं	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए		
अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं	१।५।४५-४७	वृत्ति; ओ० सू० १२०,१६२
पंडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पंथएणं जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभद्दए जाव विणीए	१।१।२०९;१।१६।२४	ओ०सू०११९
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१९।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसिं	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिबुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं	१।८।३९	१।८।२७
पडिबुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३९
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता	१।१९।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३;२।८।३;२।९।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूवं	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पण्णत्ते जाव सग्गं	१।५।६०	१।५।५५

पतिवया जाव अपासमाणी	१।१६।६२	१।१६।५९
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	१।७।१५	१।७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१।११।२	१।११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१।१६।१७१	१।१६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	१।५।३३	१।१।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१।१५।१४	१।२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	१।८।१३१	१।८।१०७
परिणमंति तं चेव	१।१२।१७	१।१२।९
परिणममाणा जाव ववरोवेंति	१।१५।१५	१।१५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१।१३।३५	१।१।९०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१।१४।८३	१।१।१९०
परितंता जाव पडिगया	१।१३।३१	१।४।१९
परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१।३।१९	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१।१।४८	१।१।४८
पल्लंसि जाव विहरंति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिसेहित्था	१।१६।२५६	१।८।१६५
पवर जाव भीए	१।१८।४४	१।१८।४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१।१६।२५३	१।८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१।५।१०४,१०५	१।५।८३,८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०,३१	१।१।१५०,१५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१।१।१९२	१।१।१५०
पसन्थदोहला जाव विहरइ	१।८।३३	१।१।६८,६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१।१।१८९	१।१।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
°पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
°पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि	१।१।१८९	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१;भ० ९।१५०,१५१
पावयणं जाव से जहेयं	१।१२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१।१।८९	१।१।८९
पासित्ता जाव नो वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
पियं जाव विविहा	१।१।२०६	भ० २।५२

पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ	१।३।३१	१।१।३०
पीइमणा जाव हियया	२।१।११	१।१।१९
पीढं	१।५।११७	१।५।११०
पुच्छणाए जाव एमहालियं	१।१।१५४,१५५	१।८।१५३
पुढवि जाव पाओवगमणं	१।५।८३	१।१।२०६
पुत्तधायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	१।२।५६,६४	१।२।४०
पुप्फ जाव मल्लालंकार	१।२।१४	१।२।१२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	१।१३।१९	१।११।२
पुरापोराणं जाव पच्चणुब्भवमाणी	१।१६।९२	वृत्ति
पुरापोराणं जाव विहरइ	१।१६।११३	१।१६।९२
पुव्वभवपुच्छा एवं	२।१।५०	२।१।१५
पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ	१।१३।१५	राय०सू० १७४
पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं	१।१६।२०१-२०३	१।१६।२३७-२३९
पोसहसालाए जाव विहरइ	१।१३।१४	१।१।५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१।११।४	१।११।२
फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं	१।५।११४	१।५।११०
फासुयं पीढ जाव विहरइ	१।५।११३	१।५।११०
बंधित्ता जाव रज्जू	१।१४।७७	१।१४।७३
बहिया जाव खणावेत्तए	१।१३।१५	१।१३।१५
बहिया जाव विहरंति	१।५।११८	१।१।१९६
बहिया जाव विहरित्तए	१।५।११७	१।१।१९६
बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उव्वलद्धे	१।१६।९७	१।१४।४३
बहूइं जाव पडिगयाइं	१।१६।१८२	१।८।१९१
बहूणि गामाणि जाव गिहाइं	१।१६।१९९	१।८।५८
बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ	१।५।३८	१।१।१९५
बहूसु जाव विहरेज्जाह	१।९।२०	१।९।२०
बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ		
जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा	१।१६।२२३,२२४	१।१६।२१३,२१४
बावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोगसमत्थे	१।१६।३०८,३०९	१।१।८४,८५
बासट्ठिं जाव उत्तरइ	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ	२।१।५५	२।१।४५
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१३।४४	१।१।२१२

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१।१।११३	१।१।१०४
भड०	१।८।९४	१।८।५७
भवणवइ० तित्थयर०	१।८।३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव बोद्दसपुव्वाइं	१।१४।८२	१।५।८०
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	१।८।२०४;२।१।२७	१।१।१०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	१।१२।४०	१।१।१०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	१।८।१८६;१।१६।३१०	१।१।१०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२।४।८	ठाणं० २।३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१।१६।२४०	१।१६।२५४
भाव जाव चित्तेउं	१।८।११८	१।८।११७
भासासमिए जाव विहरइ	१।५।३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१।१२।३९	१।५।२१
भीए जाव संजायभए	१।१४।६९	१।१।१६०
भीया जाव संजायभया	१।९।२५,२७	१।१।१६०
भीया वा	१।८।७९	१।८।७३
भीया संजायभया	१।८।७२	१।१।१६०
भुंजावेंति जाव आपुच्छंति	१।८।६६	१।८।६६
°भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	१।१२।४	१।२।१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	१।१९।२२	१।५।११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	१।१।६९	१।१।१७
भोगभोगाइं जाव विहरति	१।१६।१८३	१।१।३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	१।१६।२०८	१।१।३२
मइविकप्पणाहिं जाव उवणेंति	१।१६।२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्झेणं जाव सयं	१।१६।१६६	१।१६।२१८
मट्टियाए जाव अविरधेणं	१।८।१४३	१।५।६०
मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता	१।६।४	१।६।४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१।१२।८	१।१२।४
मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए	१।८।४१,४२	१।८।४१
मयूरपोयगं जाव तदुल्लगं	१।३।२८	१।३।२७
महत्थं०	१।८।८१	१।८।८१
महत्थं जाव उवणेंति	१।८।८४	१।८।८१
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	१।८।२०५	१।१।११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेय	१।५।९८	१।१।११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।१७।१७	१।८।८२

महत्थं जाव पाहुडं	१।१७।१६	१।५।२०
महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं	१।१३।१५	१।५।२०
महत्थं जाव रायाभिसेयं	१।५।९२;१।१९।३७	१।१।११६
महब्बले जाव महया	१।८।१६	१।५।३४
महयाहय जाव विहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि	१।१४।७७	१।१४।७५
महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय०२।२।७३
महुरालाउयं जाव नेहावागाढं	१।१६।८	१।१६।८
माणुस्सगाइं जाव विहरइ	१।१५।१९	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाणं जाव दारियं	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारचूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव बहवे	१।७।३८	१।७।२५,११
मित्त जाव संपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्तनाइ गणनायग जाव सद्धि	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्खं जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडावियं जाव सयमेव	१।१।१९१	१।१।१४९
मुंडे जाव पव्वयाहि	१।१९।१४	१।१।१०१
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	१।१९।२९	१।१९।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य णं जाव परमसुइभूए	१।१२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय०	१।१९।४६	१।१७।२५
रज्जं च जाव अंतेउरं	१।१९।२९	१।१।१६
रज्जे जाव अंतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अंतेउरे	१।८।१५१;१।१६।१८७;१।१९।२९	१।१।१६
रज्जे य जाव वियंगेइ जाव अंगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।९७
रयण जाव आभागी	१।१८।५६	१।१।९१;१।१८।५१

रहमहया	१।१६।१४७	१।८।५७
राईसर जाव गिहाइं	१।१४।४३	१।८।५८
राईसर जाव विहरइ	१।८।१४६	१।८।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	१।१४।५६	१।१४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया	१।८।१३९	ओ० सू० ९७
रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।२००	१।८।९०
रूवेण य जाव लावण्णेण	१।१६।१९०	१।८।३८
रूवेण य जाव सरीरा	१।१४।११	१।८।९०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१८।९
रोयमाणिं जाव नावयक्खसि	१।९।४०	१।९।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२९
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।९।४७	१।९।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।९।६	१।९।४
लवण जाव ओगाहेह	१।९।५	१।९।४
लवणसमुद्दे जाव एडेमि	१।९।२०	१।९।१९
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।९।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ९ वृत्ति
वण्णहेउं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१९	१।८।१९०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंझं	१।७।३३	१।७।९
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।९०
वयासी जाव तुसिणीए	१।१९।१६,१७	१।१९।१४,१५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।८।२०२	१।१।११८
वाणियगाणं जाव परियणा	१।८।६७	१।८।६६
वाबाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११

वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए	१।१।१८९	१।१।१५३
वाराओ तं चेव जाव नियधरं	१।९।४	१।९।४
वावीसु य जाव विहरेज्जाह	१।९।२०	१।९।२०
वासाइं जाव देंति	१।२।१२	१।२।१२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१।१६।१७७	१।१६।१७६
वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो	१।१६।२५८	वृत्ति
वासे जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए	१।८।१९४	१।८।१९४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१।१९।४०	१।१।१६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१।१९।२९	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	१।२।४७	१।२।४४
विणिम्मुयमाणी २ एवं	१।५।३३	१।१।१४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१।१३।३०	१।१३।२९
सइं वा जाव अलभमाणा	१।९।२२,२४	१।९।२१
सइं वा जाव जेणेव	१।९।२३	१।९।२१
संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं	१।८।८४	१।८।८१
संकिए जाव कलुससमावण्णे	१।३।२४	१।३।२१
संगयगयहसिय०	१।३।८	१।१।१३४
संचाएइ जाव विहरित्तए	१।५ ११८	१।५।११७
संचाएंति० करेत्तए ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति	१।४।१४,१५	१।४।११,१२
संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ	१।८।८२	१।८।८१
संता जाव भावा	१।१२।३२	१।१२।३१
संताणं जाव सव्वभूयाणं	१।१२।२९	१।१२।१९
संते जाव निविण्णे	१।८।७९	१।४।१२
संते जाव भावे	१।१२।२९	१।१२।१९
संपरिवुडे एवं जाव विहरइ	१।८।१४७	१।१६।१७८
संभग्गं जाव पासित्ता	१।१६।२६३	१।१६।२६२
संभग्गं जाव सण्णिवइया	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संभग्गं तोरण जाव पासइ	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए	१।१४।५३	१।१।१४५
संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि	१।५।८९	१।१।१४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	१।८।५७	१।१।६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवरचामराहिं महया	१।८।१६१	१।८।५७
सकोरेंट० सेयचामर हयगयरहमहया-भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता	१।१६।१५३	१।८।५७

सकोरेंट हयगय	१।१६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव नन्नत्थ	१।५।२५	१।५।२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७९
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१।१।६४	१।१।५९
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१५।१६	१।३।२४
सण्णद्ध०	१।१६।२४८	१।२।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१।१६।१३४;१।१८।३५	१।२।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१।१६।२५१	१।२।३२
सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह०	१।१६।२३६	१।२।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।९।३७	१।९।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१।१।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१।१६।३१	१।१६।३१
सद्द जाव गंधाणं	४१।१७।२	१।१७।२२
सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे	१।५।९	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएंति	१।१५।१३	१।१।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।९९,१००	१।८।६२,६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६,७,९
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२,११३	१।८।९९,१००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५,१५६	१।८।९९,१००
सद्दावेह जाव सद्दावेंति	१।१।१३९	१।१।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	१।३।१९	१।३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१।१।१०७	१।१।१०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०८,११२	१।१।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५,४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१।१०।५;१।१८।४८;१।१९।४२,४७	१।३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।९।५३	१।९।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	१।५।११८	१।५।११७
समणाणं जाव वीईवइस्सइ	१।३।३४	१।२।७६
समणाणं जाव साविया	१।१७।३६	१।२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१९६,१९७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१।१६।१४०	ओ० सू० ६३

समाणा जाव चिट्ठंति	१।१५।१०	१।१५।९
समाणी जाव विहरित्तए	१।२।१७	१।२।१७
समोवइए जाव निसीइत्ता	१।१६।२२७,२२८	१।१६।१९७,१९८
समोसरणं	१।५।८५	१।१।४
सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	१।१।३३	१।१।२२
सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं	१।३।९	१।१।२२
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।३००	१।१४।१६
सयमेव० आयार जाव धम्ममाइक्खइ	१।१।१५०	१।१।१४९
सरिसगं जाव गुणोववेयं	१।८।१२०	१।८।४१
सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि	१।१।१०९	१।१।१०८
सव्वओ जाव करेमाणा	१।१६।२३	१।१६।२३
सव्वं तं चेव आभरणं	१।५।३०-३२	१।१।१४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेणं	१।१।३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए	१।१४।५६	१।१४।५६;१।१।१६
सहइ जाव अहियासेइ	१।११।३	१।११।५
सहजायया जाव समेच्चा	१।८।१०,११	१।३।६,७
सहियाणं जाव पुव्वरत्ता०	१।५।११८	१।३।७
साइमं जाव परिभाएमाणी	१।१६।९३	१।१६।९२
सामदंड०	१।८।४५;१।१४।४	१।१।१६
सालइएणं जाव नेहावगाढेणं	१।१६।२५,२६	१।१६।८
सालइयं जाव आहारेसि	१।१६।१६	१।१६।१६
सालइयं जाव गोवेइ	१।१६।८	१।१६।८
सालइयं जाव नेहावगाढं	१।१६।१६;१९,२०	१।१६।८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	१।१६।२२	१।१६।८
सालइयस्स जाव एगंमि	१।१६।१९	१।१६।१६
साहरह जाव ओलयंति	१।८।९२	१।८।४८
सिंगारा जाव कुसला	१।१।१३६	१।१।१३४
सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ	१।१।१३५	१।१।१३४
सिंघाडग०	१।५।५३	१।१।३३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।३।३३;१।१३।२९;१।१६।१५३;१।१८।१६	१।१।३३
सिंघाडग जाव बहुजणो	१।७।४१;१।८।२००;१।१३।२६	१।५।५३
सिंघाडग जाव महया	१।१।९५	ओ० सू० ५२
सिक्खावइए जाव पडिवण्ण	१।१३।३६	उवा० १।४५
सिज्झिहिइ जाव मंतं	१।१५।२१	१।१।२१२

सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण०	१।१९।४६	१।१।२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	१।५।८४	ठाणं १।२४९
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	१।८।७४	१।८।७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए	१।८।७७,७८	१।८।७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	१।८।६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।३५	१।८।६७
सुइं वा०	१।९।३७	१।२।२९
सुइं वा जाव अलभमाणे	१।१६।२१५	१।१६।२१२
सुइं वा जाव लभामि	१।१६।२२१	१।१६।२१२
सुई वा जाव उवलद्धा	१।१६।२२९	१।१६।२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	१।५।८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१।१५।१३	१।१५।११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	१।८।२९	१।१।३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति	१।१।३१	१।१।२९
सुरं च जाव पसन्नं	१।१८।३३	१।१६।१४६
सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ	१।१६।३१९	१।१६।३१८
सुरूवा जाव वामहत्थेणं	१।१६।१६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं	१।१६।३०५,३०६	१।१६।३३,३४
सूमालिया जाव गए	१।१६।८७	१।१६।६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१।१९।१३	१।१।१०४
सेयवर हयगय महया भडचडगरपहकरेणं	१।१६।२३७	१।८।५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१।१६।८१-८६	१।१६।५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१।१८।६१	१।१।१०९
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१।१८।४८	१।१।१०९
हए जाव पडिसेहिए	१।१६।२५७	१।८।१६५
हट्ठ जाव हियया	२।१।२०,२१,२४,२५	१।१।१९
हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१।१।२३	१।१।१९,२२
हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए	१।५।१३	१।१।२६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।१।२०;१।१६।१३५	१।१।१९
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	१।७।९	१।७।६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१।१६।१४९	१।१६।१४६
हत्थिखंधवरगए जाव सेयवरचामराहिं	१।८।१६३	१।८।५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१।१६।२०३	१।१६।२००
हत्थी जाव छुहाए	१।१।१८५	१।१।१५७

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	१।१।१६८	१।१।१५७
हत्थीहि य जाव संपरिवुडे	१।१।१५८	१।१।१५७
हयगय०	१।१६।२४८	१।८।५७
हयगय जाव पच्चप्पिणंति	१।१६।१३९	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	१।१६।१५६	१।८।५७
हयगय जाव रवेणं	१।१।६९	१।१।६७
हयगय जाव हत्थिणाउराओ	१।१६।३०३	१।८।५७
हयगय संपरिवुडे	१।१६।१७४	१।८।५७
हयगया जाव अप्पेगइया	१।१६।१३८	१।५।१५
हय जाव सेणं	१।८।१६२	१।८।५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८५	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	१।८।१६६;१।१६।२५९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	१।१६।२८९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	१।१८।४२	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	१।१८।२४	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेंति	१।१८।४१	१।८।१६५
हरिसवस०	१।१।१९१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	१।१।१२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	१।१३।३८	ओ०सू० ५२
हिरण्णं जाव वइरं	१।१७।१६	१।१७।१६
हिरण्णागरे य जाव वहवे	१।१७।१८	१।१७।१४
हीलणिज्जे०	१।४।१८	१।३।२४
हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो	१।५।१२५	१।३।२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	१।१६।११८	१।६।११७
हीलेंति जाव परिभवंति	१।१६।११७	१।३।२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
इट्ठा जाव विहरइ	१।१।१७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी	७।१७	७।१०
अंतियं जाव असिं	५।२,२१	३।२०,२१

अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्ठेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	९।३,४;१०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्ठहिरण्णको-डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठहि वड्ढि अट्ठहि सकंसाओ पवि अट्ठवया दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४;४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१,२२,२३;७।२३,२४	६।२०
अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१९६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव झूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८।४९	८।४६
अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७९	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२९,३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०;३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८,३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ	९।५-१५	२।५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

आओसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स	२।१९	१।६०
आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं	१।७८	ठा० ३।३४८
आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव जहारिहं	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिहं	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्मं	१।७७	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८;३।४५;८।४९	वृत्ति अ० ३
इड्ढी जाव पंचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इड्ढी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेणं जाव धमणिसंतए	१।६५	१।६४
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१;४।१;५।१;६।१;७।१;८।१;९।१;१०।१	२।१
उज्जलं जाव अहियासेइ	२।३३,३९;३।२६	वृत्ति
उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जलं जाव दुरहियासं	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियता	६।२१,२३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियता	६।२१,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं	६।२३	६।२०
उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१;७।२३	६।२०
उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं । नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेसं जहा चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चए विमाणे उववातो जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णनाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाइं जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१९
उरालाइं जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६;८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव ववरोविज्जसि	४।४१	४।३९
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच सोल्लया। तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५९	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्ति	६।३३,३४	२।१८,१९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५.५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७;७।१२	ओ० सू० २२

कल्लं विउलं	१।५७	१।५७
कामदेवा जाव जीवियाओ	२।४५	२।२२
कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ	२।३०,३१	२।२२,२३
कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	२।३-६	१।११-१४
कासे जाव कोढे	४।३९	वृत्ति
कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	६।३-६	२।३-६
कुडुंब जाव इमेयारूवे	८।१८	१।६५
कुडुंबस्स जाव आधारे	१।५७	१।१३
केणट्ठेणं एवं	७।४९	७।४८
कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	७।३४	१।४८
गिहाओ जाव सोणिएण	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव आइंचइ	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ	३।४४	३।४२
गिहिणो जाव समुप्पज्जइ	१।७६,७७	१।७६
गुण जाव भावेमाणस्स	९।१८	२।१८
गुरु जाव ववरोविज्जसि	३।४४	३।४१
घाएत्ता जहा कयं तया विचिंतेइ जाव गायं	३।४२	३।२१
घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयंसि पि जाव अहियासेइ	३।२७-३८	३।२१-२६
चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । सेसं तहेव जाव सिज्झिहिति	५।५२	२।५५,५६
चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । बहुला भारिया	५।३-६	४।३-६
चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ	२।४३	भ० १२।१
जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ	८।१०-१५	१।१९-२४
जाए जाव विहरइ	९।१६,१७	२।१६,१७

जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।५६	१।५५
जाव पज्जुवासइ	७।१४	१।१६
जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए	७।५०	राय० सू० १२
जेट्ठपुत्तं जाव कणीयसं जाव आइंचइ	४।४२	३।४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए।	१।५७	१।५७
णमंसइ जाव पज्जुवासइ	१।२	ओ० सू० ५२
णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ	७।१५	ओ० सू० ५२
णाइदूरे जाव पंजलियडा	७।३५	१।२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	१।५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७।१५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	१।२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७।३५	ओ० सू० २०
तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ	१।५७	१।५७
तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि	५।४१	५।४०
तत्थ णं बाणारसीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिप० अट्ठपवित्थरप०। अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३।३-६	२।३-६
तव जाव कणीयसं	३।४५	३।४४
तिक्खुत्तो जाव वंदइ	७।३५	१।२०
तीसे य जाव धम्मकहा सम्मत्ता	२।४४	२।११
तुमं जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि	७।७५	२।२२
देवराया जाव सक्कंसि	२।४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं	७।३१	१।४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७।४६	७।४४
धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं	७।५०	७।५०
धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७।५१	७।५०
नाममुद्दगं च तहेव जाव पडिगए	६।२८	६।२०-२४

निक्खेवो	२।५७;३।५३;४।५३;५।५४; ६।४१;७।८९;८।५४;९।२७	१।८५
निक्खेवो पढमस्स	१।८५	वृत्ति
नीणेमि एवं जहा चुलणीपिय, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि	५।२१-३७	३।२१-३७
नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ जाव कणीयसं धाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ	७।५७-७३	३।२१-३८
नीलुप्पल जाव असिं	२।४५;३।२१,४४;४२१	२।२२
नीलुप्पल जाव असिणा	२।२२,२६	२।२२
पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं	१।७६	१।६६
पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि	८।३३,३४	१।६२,६३
पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि	३।४८,४९	१।६२-६३
पाउणित्ता जाव सोहम्मे	१।५३	१।८४
पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि	७।११	१।४५
पावयणं जाव जहेयं	७।३७	१।२३
पीढ जाव ओगिण्हित्ता	७।५२	१।४५
पीढ जाव संथारएणं	७।५१	१।४५
पीढ जाव संथारयं	७।१८	१।४५
पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए	७।१८	१।४५
पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे	२।४०	२।४०
पुत्तं जाव आइंचइ	७।७८	३।४२
पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं	४।४४	३।४४
पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं	१।६५	१।५७
पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स पोसहिए०	७।५४ १।६०	२।१८ ना० १।१।५३
फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं		

विहरइ । नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एवं		
कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१९,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव संथारयं	७।१९	१।४५
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२।४०	१।६०
बंभयारी समणस्स	३।१९	१।६०
बहूहिं जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूणं राईसर जहा चिंतियं जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहिं जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अहं	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्डमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३;७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७;७।१२	ओ० सू० १९-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२९
मारणंतिय जाव कालं	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५९	१।५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चं पि	८।४६	८।२७-२९
राईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

वदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४९	७।४६
विहरइ । तए णं	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ ।		
धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइं परियागं नाणत्त		
अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे		
वासे सिज्झिहिइ	९।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ		
जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति	८।२५,२६	२।१८,१९
संचाएइ जाव सणियं	२।३४	२।२८
संताणं जाव भावाणं	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
संतेहिं जाव वागरिया	८।४९	८।४९
सखिखिणियाइं जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सद्दहामि णं जाव से जहेयं	१।२३	रा० सू० ६९५
सद्दालपुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव		
जंबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६; ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ तं महाफलं		
गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवासए जाव विहरइ	४।४०;५।३८	३।२२
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया		
जाव न भंजेसि	३।४४;७।७५	२।२२
समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भंजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया ! जाव न भंजेसि	२।३४;५।२१,३९	२।२२
समणोवासया ! तं चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया ! तं चेव भणइ सो		
जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया ! तहेव जाव गायं आइंचइ	३।४४	३।२३-२५

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३९
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया		
तहेव चिंतेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ ।		
तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ ।		
साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२।७-१९	१।१७-२३,५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो		
तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ ।		
गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स		
जाव पोसहसालाए	३।७-१९	२।७-१९
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं		
पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव		
धम्मपण्णत्ति	५।७-१९	२।७-१९
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा		
सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सव्वेव		
वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसिं	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३९	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३९
सीलव्वय-गुणेहिं जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं वयाइं न छड्डेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५,३५	१।४९
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ		
जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		

तस्स धन्नाभारिया । सामी समोसढो जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं		
जहा कामदेवो जाव समणस्स	४।३-१९	१।११-१४;२।७-१९
सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ,		
कामदेवो वि जाव विहरइ	२।३६,३७	२।३४,३५
हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव		
जाव अणाढायमाणे	८।२९,३०	८।२७,२८
हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी	१।२३	ओ० सू० ८०
हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं	१।५१,५२	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठ जाव समणं	२।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।७४;८।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवरं एगा-हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगाहिरण्ण-कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए		
दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं	७।३०,३१	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव लहुकरण		
जाव पज्जुवासइ	१।४६-४९	ओ० सू० ८०; भ० ९।१४१-१४३; उवा० ७।३३
हट्ठतुट्ठा समणं	७।३७	१।५१
हणेसि वा जाव अकाले	७।२६	७।२५
हारविराइयवच्छं जाव दसदिसाओ	२।४०	ओ० सू० ४७
हेऊहि य जाव वागरणेहि	७।५०	६।२८

अंतगडदसाओ

अंतिए जाव पव्वइत्तए	३।७६	३।२०
अज्जा जाव इच्छामि	८।२०	८।७
अणगारे जाए जाव विहरइ	६।५२	ना० १।५।३५

अणुत्तरे जाव केवल०	३।९२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८९	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८९
अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्तं जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणाहिं०	६।९५	नाभ १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१।१९	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८९-९२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०९
उच्च जाव अडमाणा	३।२९,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२९	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।९९
उज्जला जाव दुरहियासा	३।९०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेणं जाव धमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३।९८	३।६१
ओहय जाव झियाइ	५।१७	३।४३
ओहय जाव झियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२;६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०९
कुमारस्स	१।१९	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाणं	८।६	५।३१

चउत्थ जाव भावेमाणी	८।३३	५।३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।२१	५।३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ	४।७	१।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति	३।२१	३।२०
जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स	३।१७	३।३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस	६।१,२	१।५,६
जइ णं भंते अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस	८।१७,१८	१।५,६
जइ णं भंते तेरस	७।३	१।७
जइ णं भंते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस	७।१,२	१।५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३।१	१।५
जइ दस	८।१९	१।७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।१,२	१।५,६
जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हइ जाव अंजलिं	३।४७-४९	ना० १।१।५३-५८
जहा गोयम सामी तहा पडिदसेइ	६।५७	भ० २।११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३।२२	भ० २।१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६।५३	६।५३
जाव संलेहणाकालं	८।३६	८।१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३।४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३।३६	ओ० सू० २०
तं महा जहा गोयमे तहा	३।१३	१।१९,२०
तीसे य धम्मकहा	३।६२	राय० सू० ६९३
तीसे य धम्मकहा	६।५०,८८	ना० १।१।१००
देहं जाव किलंतं	३।९५	वृत्ति
धारिणी सीहं सुमिणे	३।११६	१।१७
नमंसामि जाव पज्जुवासामि	६।३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३।२२	भ० २।१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३।११२	३।३
निग्गया जाव पडिगया	१।२	ना० १।१।५
निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ	३।७८-८५	भ०११।१६८;ना०१।१।११५-१५१

नेरइय जाव उववज्जंति	६।९४	६।९४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०सू० ६९३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।९	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।९५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
बारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगवं जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।९४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए बारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०;५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१,२२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१९	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूबरसमाणा	३।३०	३।१९
सरिसियाणं जाव बत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।९०
सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१९	ना० १।५।२६

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६।२८	५।१९
सिद्धे जाव प्पहीणे	३।९२	वृत्ति
सिरिवणे विहरइ	६।७५	६।३३
सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे	६।३९	ओ० सू० ५३
सोच्चा	१।१९	ना० १।१।९९
सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि		
जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले	३।६३-७३	ना० १।१।१०१-१०७;११०-११३
हट्ठ	६।५१	ना० १।१।१०१
हट्ठ जाव हियया	३।२५	ओ०सू०२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।४२	३।२५

अणुत्तरोववाइयदसाओ

अंबगठिया इ वा एवामेव	३।४५	३।३१; वृत्ति
अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे	३।२७	अं०६।५७
आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति	३।२४	३।२२
इमासि जाव साहस्सीणं	३।५६	३।५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३।३३	३।३१
इ वा जाव सोणियत्ताए	३।३६	३।३१
उच्च जाव अडमाणे	३।२४	भ० २।१०९
उण्हे जाव चिट्ठइ	३।३५	३।३४
उरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३।३०	भ० २।६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३।३५	३।३१
एवं जाव सोणियत्ताए	३।३४	३।३१
एवामेव०	३।३९-४४,४६,४७,४९,५०	३।३१
गोयमे जाव एवं	१।१०	भ० २।७१
चंदिम जाव नवय०	३।५९	१।८
जहा खंधओ तहा जाव हुयासणे	३।५२	भ०२।६४; ना०१।१।२०२
जहा जमाली तहा निग्गओ। नवरं पायचारेणं।		
जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि।		
तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।		

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं आपुच्चइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए अणगारे जाए—इरियासमिए		
जाव गुत्तबंभयारी	३।११-२१	भ० ९।३३,११,११; ना० १।१,१।५
जाव उप्पिं पासा विहरइ	१।७	ना० १।१।९३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
बिलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुंडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुंडे जाव पव्वइए	३।६९	३।२२
सजमेणं जाव विहरइ	३।६९	३।२७
संजमेणं जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुक्कं०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अंतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एवं जाव इमस्स	५।१०	५।१
एवं जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एवं जाव परियट्टंति	५।८	४।१३
पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०	४।१५	४।१
रूसियव्वं जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रूसियव्वं जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सइं	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सतिं	१०।१६	१०।१४
हीलियव्वं जाव पणिहिंदिए	१०।१६	१०।१४

विवागसुयं

अट्ठमस्स उक्खेवओ	१।८।१,२	१।२।१,२
अट्ठि जाव महियगत्तं	१।४।२८	१।२।६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१।१।२८	वृत्ति
अद्धहारं जाव पट्टं मउडं	१।६।८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव	१।७।७	अं० ६।५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	१।२।२४	ना० १।१।३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं	१।३।१३	१।२।१४
अविणिज्जमाणंसि जाव भियामि	१।२।२६	१।२।२४
असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरपत्तेहि	१।६।२३	१।६।१९
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे	१।१।४७;१।३।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	१।३।७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	१।१।७०	वृत्ति
अहापडिरूव जाव विहरइ	१।१।२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे	१।१।३९	ना० १।८।४२
अहीण जाव जुवराया	१।६।२	१।५।४
अहीण जाव सुरूवा	१।२।७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	१।२।१०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	१।२।१६	१।१।४२
आसी जाव विहरइ	१।३।१६	१।१।४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।३।४१	१।२।६४
आसुरुत्ते जाव साहट्टु	१।६।३५	१।२।६४
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।२।७;१।३।७	वृत्ति
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।१९	ना० १।१।९६
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।२०	ना० १।१।९७
इट्ठरूवे जाव सुरूवे	२।१।१५	२।१।१५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।६।३४	१।१।४१
इरियासमिए जाव बंभयारी	१।१।७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२।१।३१	ओ०सू० २१
उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए	१।७।३४	१।२।५६
उक्किट्ठि जाव करेमाणे	१।३।४३	१।३।२४
उक्किट्ठि जाव समुद्द०	१।३।२४	ओ०सू० ५२

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।९।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।९।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५९	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	१।९।३४	१।४।३६
उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ	१।६।२९	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।९।४८	ना० १।१।९३
उस्सुक्कं जाव दसरत्तं	१।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओहय०	१।२।२७	१।२।२४
ओहय जाव झियाइ	१।२।२४;१।९।१६	वृत्ति
ओहय जाव झियासि	१।२।२५;१।९।१७	१।२।२४
ओहय जाव पासइ	१।२।२५;१।९।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०,५५,५९;१।९।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४;१।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।५२,५३;१।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेति	१।३।५३,६२;१।६।३४;१।९।२०,४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेइ	१।९।४५	१।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६९
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गंगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८९
गाहावई जाव तं धण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	१।५।२७	१।२।६४
घाएंति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	१।७।१०,११	१।७।९;१।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१,२	१।२।१,२

छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्ठस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं	१।२।२८	१।२।२४
जणसद्दं च जाव सुणेत्ता	१।१।१९	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसड्ढे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५;१।४।३९	१।१।७०
०ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५;१।९।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।९।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
तं चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
तंतीहि य जाव सुत्तरुज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
तं महया जहा पढमं तहा	२।१।३२	२।१।१२; भ० ९।१५८
तच्चस्स उक्खेवो	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।७।१९
तीसे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो णं जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१९
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमित्ते	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	१।२।२४
नगरगोरूवाणं जाव वसभाण	१।२।२८	१।२।२४
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	१।२।२४
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो	१।२।७४;१।४।४०, १।५।३०;१।६।३८;१।७।३९;१।८।२८;१।९।६०	१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ		
अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अडइ	१।७।७	१।२।१५
पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंच्चाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१३
पज्जेइ जाव एलमुत्तं	१।६।२३	१।६।१४

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२९	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१,४२;१।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरूवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२,१३	१।१।४२,४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६९	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१;१।५।२८;१।७।३७;१।८।८,२६;१।९।५८; १।१०।१८	१।१।४१
फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।९३
बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहि	१।२।२६	१।२।२४
बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
बहूहिं जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव जओ णं	१।१।३४	१।१।३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ	२।१।३५	२।१।१३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१।२।१५	भ० २।११०
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४९	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारियं	१।९।३१	१।२।३१
मासाणं जाव पयाया	१।७।२९	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०;१।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१९
मित्त जाव अण्णाहि	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणं	१।९।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।९।५७	१।२।३७

मित्त जाव परिवुडा	१।२।५४	१।२।३७
मित्त जाव परिवुडाओ	१।७।२३	१।७।१९
मित्त जाव परिवुडे	१।३।५५	१।२।३७
मित्त जाव महिलाओ	१।७।२६	१।७।१९
मित्त जाव सद्धि	१।७।२३	१।७।१९
मित्त जाव सद्धि	१।९।४५	१।२।३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१।१।२६	१।१।१५
मुंडा जाव पव्वयंति	२।१।३१	२।१।१३
रट्ठं च	१।१।५७	१।१।५७
रट्ठे य जाव अंतेउरे	१।१।५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अहं	२।१।१३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	१।२।७२	१।१।५०
राईसर जाव प्पभियओ	१।१०।७	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाह०	१।५।२२,२३	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१।५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्थवाहेहिं	१।९।५७	१।१।५०
राया जाव भीईवयमाणे	१।९।३७	१।९।३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	१।६।२३	१।६।१६
संगयगय०	१।२।७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसभाण	१।२।२४	१।२।२०
सण्णद्ध जाव पहरणे	१।२।२८	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं	१।३।४७	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा०	१।३।२४	१।२।१४
सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि	१।६।२३	१।६।२२
समणे जाव विहरइ	१।१।२०	ना० १।१।९७
समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	१।४।२२-२४	१।२।५७-५९
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	१।३।१५	१।२।१५
सागरोवम०	१।१।७०	१।१।५७
सिंघाडग जाव एवं	१।१०।१३	१।१।५३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।२।५७;१।८।२१;२।१।२३	१।१।५३
सुंदरथण	१।२।७	वृत्ति
सुबहुं जाव समज्जिणित्ता	१।८।१३;१।९।२९;१।१०।८	१।१।५१
सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं	२।१।१०,११	ओ०सू० १४८,१४९
हट्ठतुट्ठहियया	१।१।२९	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	१।३।५०	१।३।४९

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	°मणप्पत्ते	°मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेसु	जूहेसु
६०	२२	हीत्थ	हत्थी
१७७	३	कट्ट	कट्टु
२०६	१०	विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
३०९	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१९	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासण्णयाए	पज्जुवासणाए
४९१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१९	१९	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१९	°समुदएणं	°समुदएण
५९८	१२	सस्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१९	६	दसं	दस
७३०	२०	खंणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
७३९	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणंदे

पाठान्तर

१६	पा० ९	पटटंसि	पट्टंसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेणं

परस्परोपग्रहो जीवानाम्